A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 22 मार्च, 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 168, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

महाकाल की नगरी उज्जैन में चैत्र की एक बादलों भरी शाम

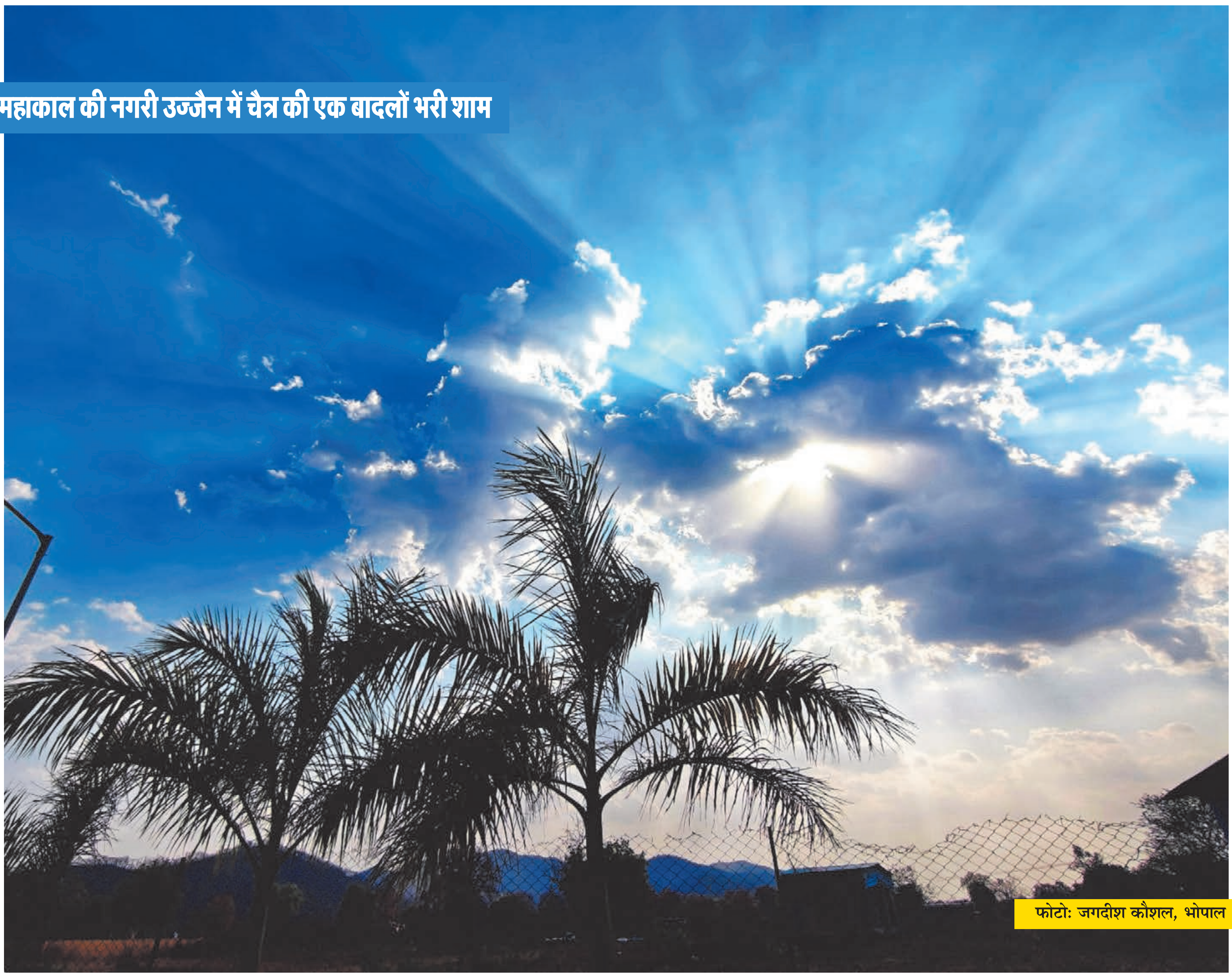

फोटो: जगदीश कौशल, भोपाल

सुप्रभात

मैं काम करते हुए नहीं थकता
लेकिन काम नहीं करने
पर थक जाता हूँ।
खाली बैठना अच्छा नहीं लगता
इसी तरह किसी को %नहीं% कहना भी
÷नहीं÷ की जगह ÷हां÷ शब्द
रख कर देखता हूं।

÷हां÷
इतना कह भर देने से उ
म्मीद बंध जाती है
और, %नहीं हो पाएगा% का डर
उम्मीद होने से खत्म हो जाता है।

÷हां÷ मैं हूं ना , चलते हुए आदमी को
रुका हुआ देखकर जब मैंने कहा
तो उसकी आँखें चमक उठीं।
एक तारा अधिक दिखा
उस शाम आकाश में।

– राजेश गनोदवाले

सजदे में झुके सिर

दुआओं में उठे लाखों हाथ

● ईद की खुशबू से महका भारत, हर ओर रही रौनक

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर में ईद-उल-फितर का पवित्र त्योहार बड़े जोश से मनाया गया। यह त्योहार रमजान के पवित्र महीने के खत्म होने के बाद मनाया जाता है। जब आसमान में शव्वाल महीने का नया चांद नजर आता है, तब ईद की शुरुआत होती है। यह दिन खुशी, भाईचारे और एक-दूसरे के साथ प्यार बांटने का प्रतीक है। ईद-उल-फितर का बहुत खास महत्व है। इस्लाम में रमजान का महीना बेहद पवित्र माना जाता है क्योंकि इसी महीने में कुरान का अवतरण हुआ था। पूरे महीने रोजा रखने के बाद ईद का दिन अल्लाह का शुक्र अता करने का दिन होता है। लोग इस बात के लिए शुक्रिया कहते हैं कि उन्हें रोजा रखने और इबादत करने की ताकत मिली। ईद-उल-फितर का यह पवित्र दिन सिर्फ एक त्योहार नहीं, बल्कि दिलों को जोड़ने और खुशियां बांटने का खास मौका है। आज सुबह मस्जिदों और ईदगाहों में हजारों-लाखों लोग एक साथ नमाज अता कर अल्लाह का शुक्र अता किया, नए कपड़ों में सजे बच्चे खुशी-खुशी दौड़-भाग कर रहे थे।

मिडिल ईस्ट में पहली बार ईद पर रौनक रही गायब

बाजार सूने, खुले में नमाज पर रोक

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक तरफ जहां दुनियाभर में ईद का जश्न मनाया जा रहा है तो वहीं मिडिल ईस्ट में अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच चल रही जंग ने इलाके में इस त्योहार को फीका कर दिया है। ईरान में बाजार सूने पड़े हैं, यूएई, कतर

और कुवैत में खुले मैदान में नमाज पढ़ने पर रोक लगा दी गई और 60 साल में पहली बार इजरायल के यरुशलम में अल-अक्सा मस्जिद को ईद की नमाज के लिए बंद कर दिया गया। **मुसलमानों का तीसरा सबसे पवित्र स्थल अल-अक्सा मस्जिद-** 1967 में हुए अरब-इजरायल के युद्ध के बाद यह पहला मौका है जब इस मस्जिद को पूरी तरह से बंद किया गया हो। यह मुसलमानों के लिए मक्का-मदीना के बाद तीसरा सबसे बड़ा पवित्र स्थल है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किया राजस्थान के निवेशकों से संवाद

देश के दिल और असीम विकास अवसरों के केन्द्र मप्र से जुड़िए

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश और राजस्थान जुड़वा भाइयों की तरह हैं। दोनों राज्य मिलकर विकसित, आत्मनिर्भर और सशक्त भारत तैयार कर रहे हैं। हम सिर्फ विरासतों और विविधताओं के ही नहीं, आर्थिक दृष्टि से भी एक-दूसरे के स्वाभाविक साझेदार हैं। राजस्थान का विकसित टेक्सटाइल, जेम्स-एंड-ज्वेलरी और मध्यप्रदेश की ऑर्गेनिक कॉटन उत्पादन क्षमता, टेक्सटाइल पार्क एवं मजबूत मैन्युफैक्चरिंग इकोसिस्टम मिलकर एक सशक्त वैल्यू चैन तैयार कर सकते हैं। मध्यप्रदेश और राजस्थान के बीच पार्वती-कालीसिंध-चंबल राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना पर तेजी से काम चल रहा है। ये परियोजना दोनों राज्यों की तस्वीर और तकदीर बदलेगी। लगभग 1 लाख करोड़ रूपए की इस परियोजना में दोनों राज्यों को मात्र 5-5 प्रतिशत राशि देनी होगी। इसकी 90 प्रतिशत लागत भारत सरकार देगी। उन्होंने कहा है कि दोनों राज्यों के बीच रोटी-बेटी का संबंध रहा है और अब पानी का संबंध भी बन गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को जयपुर में आयोजित 'इन्टरेक्टिव सेशन ऑन इन्वेस्टमेंट अपॉर्च्युनिटीज इन मध्यप्रदेश' में राजस्थान के निवेशकों को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलित कर सेशन का शुभारंभ किया। उन्होंने राज्य के सभी निवासियों को हाल ही में मनाए गए राजस्थान राज्य के स्थापना दिवस (19 मार्च) और अखंड सौभाग्य के लोक-पर्व गणगौर पूजन की बधाई और मंगलकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश अभूतपूर्व प्रगति कर रहा है।राज्यों के बीच प्राकृतिक संसाधनों के बंटवारे मधुरता से पूरे हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि राजस्थान के व्यापारियों ने देश-दुनिया में व्यापार-व्यवसाय में अपना नाम कमाया है।

म.प्र. में है औद्योगिक प्रगति और निवेश की अनंत संभावनाएँ

औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन तथा एमएसएमई के प्रमुख सचिव श्री राघवेंद्र कुमार सिंह ने निवेशकों को बताया कि मध्यप्रदेश भारत के हृदय में स्थित राज्य है। जहां हर सेक्टर में औद्योगिक प्रगति और निवेश की अनंत संभावनाएं विद्यान हैं। मध्यप्रदेश ने नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। प्रदेश में 8 एयरपोर्ट और औद्योगिक क्षेत्र विकसित करने के लिए 1 लाख एकड़ भूमि उपलब्ध है। राज्य सरकार ने 'ईज ऑफ डूइंग' पर ध्यान देते हुए नई औद्योगिक नीतियां लागू की हैं। निवेशकों को 40 प्रतिशत तक कैपिटल सब्सिडी दी जा रही है। कृषि, डेयरी और फूड प्रोसेसिंग के क्षेत्र में आगे बढ़ने की अपार संभावनाएं हैं। उद्यानिकी फसलों के उत्पादन में मध्यप्रदेश अग्रणी राज्य है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने धार में टेक्सटाइल सेक्टर के पहले पीएम मित्र पार्क का भूमि-पूजन किया है।

राष्ट्रपति ने परिवार के साथ की गिरिराजजी की पूजा

● गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा भी की, गोल्फ कार्ट से डेढ़ घंटे में 21 किमी पूरे किए

मथुरा (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शनिवार को परिवार के साथ गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा की। राष्ट्रपति मथुरा प्रवास के आखिरी दिन सुबह करीब साढ़े 8 बजे वृंदावन के रेडिसन होटल से दानघाटी मंदिर पहुंचीं। गिरिराज जी के दर्शन किए। दूध से अभिषेक किया। प्रसाद चढ़ाया। उनके साथ राज्यपाल आनंदीबेन पटेल भी थीं। पूजा-अर्चना के बाद राष्ट्रपति ने 21 किलोमीटर की गोवर्धन परिक्रमा शुरू की। थोड़ी दूर पैदल चलीं। फिर परिवार संग गोल्फ कार्ट में सवार होकर डेढ़ घंटे में परिक्रमा पूरी की।

गोवर्धन जाने वाली पहली राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू स्वतंत्र भारत की पहली राष्ट्रपति हैं, जो गोवर्धन पहुंची हैं। गिरिराज जी की नगरी गोवर्धन में राष्ट्रपति के आगमन को लेकर खास तैयारी रही। पूरे गोवर्धन को दुल्हन की तरह सजाया गया। तिराहा चौराहा पर रंग बिरंगी लाइटों से सजावट की गई। दानघाटी मंदिर में गिरिराज जी का रंग बिरंगे फूली से श्रृंगार किया गया। एक दिन पहले राष्ट्रपति मुर्मू ने बेटी इतिश्री मुर्मू, दामाद गणेश हेम्ब्रम और दोनों नातिनें आद्याश्री और नित्याश्री के साथ केलीकुंज आश्रम पहुंची थीं। यहां उनके लिए कुर्सियां लगाई गई थीं।

चतुर्थ मां कूष्माण्डा

कू' का अर्थ है छोटा, 'ष् ' का अर्थ है ऊर्जा और 'अंडा' का अर्थ है ब्रह्मांडीय गोला सृष्टि या ऊर्जा का छोटे से वृहद ब्रह्मांडीय गोला। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में ऊर्जा का संचार छोटे से बड़े में होता है। यह बड़े से छोटा होता है और छोटे से बड़ा; यह बीज से बढ़ कर फल बनता है और फिर फल से दोबारा बीज हो जाता है।

सुबह सवेरे
इंदौर ■ रविवार, 22 मार्च 2026

> जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
>
> चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

ईद पर भोपाल में अमेरिका-इजराइल मुर्दाबाद के नारे

● राजस्थान में लोगों ने काली पट्टी बांधकर अता की नमाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर में शनिवार को ईद मनाई जा रही है। इस दौरान अमेरिका-इजराइल और ईरान जंग का असर दौराने को मिला है। शिया समुदाय के लोगों ने श्रीनगर, भोपाल, जयपुर, अजमेर, सीकर, बंगाल के मुर्शिदाबाद और यूपी के संभल में नमाज के दौरान लोग

भोपाल

काली पट्टी बांधकर पहुंचे। भोपाल के इमामबाड़ा में अयातुल्लाह अली खामेनेई की तस्वीर रखकर श्रद्धांजलि दी गई। तकरीर में मौलाना राजी उल हसन ने जुल्म के खिलाफ खड़े होने की बात कही। शिया समुदाय ने फतेहगढ़ इमामबाड़ा में काली ईद मनाई। नमाज के बाद अमेरिका और इजराइल मुर्दाबाद के नारे लगे। राजस्थान के जयपुर, सीकर, अजमेर सहित कई जिलों में काली पट्टी बांधकर नमाज अदा की गई।

पुलिसकर्मियों का आरोपियों के फोटो-वीडियो अपलोड करना गलत

● एससी बोला-यह निष्पक्ष सुनवाई के लिए खतरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मोबाइल से शूट वीडियो-फोटो को तुरंत सोशल मीडिया पर अपलोड करने के ट्रेंड पर कड़ी चिंता जताई है। कोर्ट ने कहा- इससे निष्पक्ष सुनवाई प्रभावित होती है और आरोपियों के खिलाफ

पहले ही माहौल बन जाता है। सीजेआई सूर्यकांत, जस्टिस बागची और जस्टिस विपुल पंचोली की बेंच ने शुक्रवार को एक याचिका पर सुनवाई की। इसमें कहा गया है कि पुलिस आरोपियों के वीडियो और फोटो सोशल मीडिया पर डालकर लोगों के मन में पूर्वाग्रह पैदा कर रही है। याचिका हेमेंद्र पटेल ने दायर की है। याचिकाकर्ता ने कहा कि पुलिस आरोपियों की हथकड़ी लगी, रस्सियों से बंधी या अपमानजनक स्थिति वाली तस्वीरें सोशल मीडिया पर डाल रही है। इससे व्यक्ति की गरिमा को ठेस पहुंचती है और जनता में पूर्वाग्रह बनता है। कोर्ट ने इस पर सहमति जताते हुए इसे गंभीर चिंता का विषय माना है। याचिकाकर्ता ने कहा कि पहले भी राज्यों को पुलिस मीडिया ब्रीफिंग के लिए गाइडलाइन बनाने को कहा जा चुका है, जिसमें सोशल मीडिया पोस्ट भी शामिल होंगे। आज हर मोबाइल फोन रखने वाला व्यक्ति खुद को मीडिया समझने लगा है।

पीएम मोदी ने ईरानी राष्ट्रपति से की बातचीत

● मिडिल ईस्ट में हमलों की निंदा की, कहा-समुद्री रास्तों का खुला रहना बहुत जरूरी

तेल अवीव/तेहरान (एजेंसी)। अमेरिका-इजराइल और ईरान जंग का शनिवार को 22वां दिन था। पीएम ने शनिवार को ईरानी राष्ट्रपति से फोन पर बातकर उन्हें ईद और नवरोज की बधाई दी। उन्होंने इसकी जानकारी सोशल मीडिया पर दी। पीएम ने लिखा- मैंने ईरान के राष्ट्रपति डॉ. मसूद पजशकियान से बात की। हमने उम्मीद जताई कि इस त्योहार के समय मिडिल ईस्ट में शांति और स्थिरता आए।

मोदी ने ईरानी राष्ट्रपति से बातचीत में मिडिल ईस्ट में जरूरी इन्फ्रास्ट्रक्चर (जैसे तेल, बिजली आदि) पर हो रहे हमलों की निंदा की, क्योंकि इससे इलाके की शांति और दुनिया की सप्लाई पर असर पड़ता है। उन्होंने कहा कि समुद्री रास्ते खुले और सुरक्षित रहना बहुत जरूरी है, ताकि व्यापार ठीक से चलता रहे। इसके साथ ही, ईरान में रह रहे भारतीयों की सुरक्षा में मदद के लिए ईरान का धन्यवाद किया। **ट्रम्प ने नाटो देशों को कायर बताया-** अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने ईरान युद्ध में साथ न देने पर नाटो सहयोगी देशों पर नाराजगी जताई है। ट्रम्प ने कहा है कि नाटो देश कायर हैं।

पत्नी मायके में, पति ने कट्टे से अपनी गर्दन उड़ाई

फसल काटने के लिए पांच दिन पहले हैदराबाद से भिंड लौटा था

भिंड (नप्र)। भिंड में 35 साल के युवक ने कट्टे से फायर कर अपनी गर्दन उड़ा ली। गोली की आवाज सुनकर दूसरे कमरे में मौजूद मां और भाई उसके पास पहुंचे तो वह लहूलुहान हालत में पड़ा था। उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया। वहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

मामला देहाता थाना क्षेत्र का है। पुलिस के मुताबिक, घटना कुसमरा गांव में शुक्रवार रात की है। मृतक का नाम रवि शाक्य था। वह हैदराबाद में किसी होटल में काम करता था। पांच दिन पहले ही वहां से फसल काटने के लिए लौटा था।

भाई मुकेश ने बताया कि शुक्रवार दोपहर वह मेरे साथ फसल काटने गया था। वहां से लौटने के बाद अपने कमरे में चला गया। इसके बाद रात में गोली चलने की आवाज आई।

मेडिकल कॉलेज में प्रदेश की प्रथम डिजिटल लाइब्रेरी का किया शुभारंभ

सुपर स्पेशलिटी अस्पताल रीवा में रिक्त पदों में भर्ती की कार्यवाही तेजी से करें : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल की अध्यक्षता में श्यामशाह मेडिकल कॉलेज रीवा की सामान्य सभा की बैठक मेडिकल कॉलेज सभागार में संपन्न हुई। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि रीवा में चिकित्सा सुविधाओं का तेजी से विस्तार हो रहा है। सुपर स्पेशलिटी अस्पताल रीवा में 13 किडनी ट्रांसप्लांट और 36 ओपन हार्ट सर्जरी के सफल ऑपरेशन होना यहां के लिए बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने निर्देश दिए कि संचालक चिकित्सा शिक्षा सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में रिक्त पदों में भर्ती की प्रक्रिया तेज करें। जिससे यहाँ नये विभागों में कार्य शुरू हो सके। डीन सुपर स्पेशलिटी के डॉक्टरों को आयुष्मान योजना की शेष बची प्रोत्साहन राशि का तत्काल वितरण करायें। डॉक्टरों के

लिए दो माह में आधुनिक आवास भी उपलब्ध हो जायेंगे। कैंसर यूनिट भवन का निर्माण पूरा होते ही दो माह में कैंसर के उपचार की आधुनिक सुविधा उपलब्ध हो जायेगी। कैंसर के उपचार के लिए लीनेक और पेट स्केन मशीन शीघ्र स्थापित हो जायेगी। कैंसर अस्पताल में 200 बेड में भर्ती की सुविधा मिलेगी।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि सरकारी मेडिकल कॉलेज में प्रदेश की प्रथम डिजिटल लाइब्रोरी का शुभारंभ किया गया है। इसमें पाँच हजार किताबें डिजिटली उपलब्ध है। एक किताब को कई विद्यार्थी एक साथ पढ़ सकते हैं। इसके लॉगिन पासवर्ड से किताबों को डाउनलोड करने की भी सुविधा रहेगी। मेडिकल के विद्यार्थी घर से भी इसका लाभ उठा सकते हैं। इसमें 4 लाख प्रश्न और उत्तर भी उपलब्ध है। मेडिकल एजुकेशन के लिए यह रीवा की बड़ी उपलब्धि है।

11 जिलों में ओलावृष्टि, खजुराहो में 2.34 इंच बारिश

मानसून जैसा अहसास- प्रदेश में आसमान से बरसी आफत!

भोपाल (नप्र)। एमपी में पिछले 3 दिन यानी, 72 घंटे से साइक्लोनिक सर्कुलेशन (चक्रवात) और ट्रफ एक्टिव है। इस वजह से भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर-उज्जैन समेत 42 से ज्यादा हिस्से में ओले-बारिश और आंधी का दौर चला।

शनिवार को पूर्वी हिस्से में सिस्टम एक्टिव रहेंगे। इस वजह से रीवा-सिंगरौली समेत 14 जिलों में बारिश का अलर्ट है। 74किमी प्रतिघंटा और ओले गिरने की वजह से कई जिलों में गेहूं, केले, पपीता और संतरे की फसलें बर्बाद हो गई है। वहीं 11 जिलों में ओलावृष्टि, खजुराहो में 2.34 इंच बारिश हुई।

टीकमगढ़ के जतारा थाना क्षेत्र की ग्राम पंचायत मुहारा में शुक्रवार रात बिजली गिरने से महिला और उसका भतीजा झुलस गए। दोनों को देर रात जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। भतीजे को झांसी रेफर कर दिया गया है।

छतरपुर में पुरानी दुकानों का छज्जा अचानक गिरा

छतरपुर में शुक्रवार देर शाम हुई मूसलाधार बारिश के दौरान बस स्टैंड स्थित नगर पालिका की पुरानी दुकानों का छज्जा अचानक गिर गया। इस घटना में दो लोगों को मामूली चोटें आईं, जिन्हें प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई। गनीमत रही कि बारिश के कारण उस समय दुकानों के बाहर अधिक लोग मौजूद नहीं थे, जिससे बड़ा हादसा टल गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, यह घटना रात करीब 8 बजे हुई जब तेज बारिश हो रही थी। छज्जा गिरने से दुकानों के बाहर खड़ी कुछ गाड़ियां भी मलबे की चपेट में आ गईं, जिससे उन्हें नुकसान पहुंचा है। मौसम विभाग के अनुसार, 18 मार्च से ही प्रदेश में ओले-बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव हो गया था। जिसका असर भी देखा गया। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, तीन ट्रफ और एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन की एक्टिविटी होने की वजह से मौसम का मिजाज बदला रहा।

स्ट्रॉन्ग सिस्टम...इन जिलों में ओले-बारिश

पिछले 24 घंटे में 42 जिलों के करीब 112 शहर या कस्बों में बारिश हुई। इनमें इंदौर, धार, खरगोन, बड़वानी, आलीराजपुर, झाबुआ, बुरहानपुर, खंडवा, भोपाल, राजगढ़, विदिशा, रायसेन, सीहोर, नर्मदापुरम, हरदा, बैतूल, ग्वालियर, मऊगंज, श्योपुर, मुरैना, दतिया, अशोकनगर, रतलाम, उज्जैन, आगर-मालवा, शाजापुर, देवास, सागर, दमोह, पन्ना, छतरपुर, कटनी, उमरिया, मैहर, सतना, अनूपपुर, जबलपुर, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, सिवनी, पांढुर्णा, मंडला जिले शामिल हैं।

सबसे ज्यादा पानी धार के बदनावर और बैतूल के घोड़ा डोंरी में पौन इंच तक गिर गया। बड़वानी, सेंधवा, भैंसदेही, मुलताई, नतेरन, आमला, बैतूल, भोपाल, दमोह, अमरवाड़ा में आधा इंच या इससे ज्यादा बारिश हुई।

वहीं, आलीराजपुर, बड़वानी, विदिशा बैतूल, झाबुआ, खंडवा, आगर-मालवा, विदिशा, छिंदवाड़ा, जबलपुर, दमोह, सिवनी, छतरपुर जिलों में ओले गिरे। तेज आंधी चलने से खेतों में खड़ी फसलों को खासा नुकसान हुआ है।

पंजाब और राजस्थान में पानी पर सियासी आग

● पीएम मोदी के पास भगवंत मान की शिकायत लेकर पहुंच सकते हैं भजन लाल

जयपुर (एजेंसी)। पंजाब और राजस्थान के बीच नदी के पानी को लेकर सियासी जंग छिड़ गई है। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने राजस्थान से पानी के शुल्क के बकाया 1.44 लाख करोड़ रुपये मांगे हैं। उन्होंने यह राशि नहीं दिए जाने पर राजस्थान को पानी नहीं देने की चेतावनी दी है। इस पर राजस्थान के जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने पंजाब को राशि देने से साफ इनकार कर दिया है। अब संकेत मिल रहे हैं कि राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल पीएम मोदी से मिलेंगे और उनसे भगवंत मान की शिकायत करेंगे। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने पानी का शुल्क मांगा।

अब ब्रिटिश सरकार नहीं, पंजाब सरकार है

भगवंत मान ने 1920 में ब्रिटिश सरकार, बीकानेर रियासत और बहावलपुर (अब पाकिस्तान में) के बीच हुए समझौते का हवाला देते हुए कहा था कि राजस्थान अपना पानी का बकाया शुल्क चुकाए या पानी लेना बंद कर दे। इस पर राजस्थान के जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने कहा है कि उस समझौते के तहत शुल्क ब्रिटिश सरकार को दिया जाना था, न कि पंजाब को। सुरेश सिंह रावत ने कहा है कि आजादी के बाद सन 1955, 1959 और 1981 में रावी, ब्यास और सतलुज नदियों के पानी के बंटवारे को लेकर समझौते हुए थे। इनमें कहीं भी रॉयल्टी या अतिरिक्त शुल्क का कोई प्रावधान नहीं है।

देश में खुलेंगे 100 नए सैनिक स्कूल, एनसीसी का होगा विस्तार

● राजनाथ सिंह का बड़ा ऐलान, कहा-हमने एनसीसी में रिक्तियों की संख्या बढ़ा दी है

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश की रक्षा तैयारियों और राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भागीदारी को नया आयाम देते हुए केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बड़ी घोषणाएं की हैं। सैनिक स्कूल घोड़ाखाल के डायमंड जुबली समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने देश भर में 100 नए सैनिक स्कूल खोलने और एनसीसी कैडेटों की संख्या में भारी बढ़ोतरी करने का ऐलान किया। रक्षा मंत्री ने युवाओं में अनुशासन, नेतृत्व और देशभक्ति के मूल्यों को समाहित करने के उद्देश्य से नेशनल कैडेट कोर के विस्तार की घोषणा की। उन्होंने कहा, हमने एनसीसी में रिक्तियों की संख्या बढ़ा दी है। पहले जहां भर्ती का लक्ष्य 17 लाख (1.7 मिलियन) था, अब इसे बढ़ाकर 20 लाख (2 मिलियन) करने का निर्णय लिया गया है। इससे अधिक से अधिक बच्चों को राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक संस्कार सीखने का अवसर मिलेगा। सैन्य उन्मुख शिक्षा के दायरे को बढ़ाते हुए

राजनाथ सिंह ने बताया कि सरकार पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) मॉडल के तहत देश में 100 नए सैनिक स्कूल स्थापित करने जा रही है। उन्होंने जोर देकर कहा कि ये संस्थान न केवल रक्षा सेवाओं के लिए युवाओं को तैयार करते हैं, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने के लिए भी उन्हें सक्षम बनाते हैं। रक्षा मंत्री ने सैनिक स्कूलों में लड़कियों के प्रवेश की अनुमति देने के सरकार के फैसले को ऐतिहासिक और क्रांतिकारी बताया। उन्होंने इसे महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक बड़ा मील का पत्थर करार देते हुए कहा कि महिला कैडेटों के प्रदर्शन ने यह साबित कर दिया है कि हमारी बेटियां हर क्षेत्र में बेटों के बराबर हैं। समारोह के दौरान उन्होंने सैनिक स्कूल घोड़ाखाल की विरासत की सराहना की। उन्होंने गर्व के साथ बताया कि इस अकेले स्कूल ने अब तक 800 से अधिक छात्र नेशनल डिफेंस एकेडमी को दिए हैं।

60 साल में पहली बार अल-अक्सा मस्जिद ईद में बंद

ईरान में बाजार सूने, यूएई, कतर और कुवैत में खुले में नमाज पर रोक

तेल अवीव/तेहरान (एजेंसी)। दुनियाभर में शनिवार को ईद मनाई गई। मिडिल ईस्ट में अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच पिछले 22 दिनों से जंग चल रही है। ऐसे में 60 साल में पहली बार इजराइल के यरुशलम में अल-अक्सा मस्जिद को ईद की नमाज के लिए बंद कर दिया गया है। 1967 के अरब-इजराइल युद्ध के बाद पहली बार है,

जब अल-अक्सा को पूरी तरह बंद किया गया है। यह मुसलमानों के लिए मक्का और मदीना के बाद तीसरा सबसे पवित्र स्थल है। ईरान में शुक्रवार को ईद मनाया गया। इस मौके पर बाजार वीरान नजर आए। वहीं कतर, यूएई और कुवैत जैसे खाड़ी देशों में ईद मनाया गया। जंग की वजह से खुले मैदानों में नमाज नहीं हुई।

यरुशलम में आम लोगों की एंट्री बंद

28 फरवरी से अमेरिका और इजराइल के ईरान के खिलाफ शुरू हुए युद्ध के बाद, सुरक्षा कारणों से इजराइली अधिकारियों ने यरुशलम में आम लोगों की एंट्री बंद कर रखी है। सिर्फ वहां रहने वाले लोग या दुकानदार ही अंदर जा सकते हैं। 6 मार्च से वेस्टर्न वॉल, अल-अक्सा मस्जिद और चर्च ऑफ द होली सेपल्कर जैसे सभी धार्मिक स्थल बंद हैं। पूरे देश में भीड़ पर भी पाबंदी है। मस्जिद के अंदर 100 और बाहर 50 लोगों तक ही इकट्ठा होने की अनुमति है।

मथुरा में गोरक्षक साधु की मौत पर हंगामा

● जमकर हो गया पथराव, पुलिस की गाड़ियां भी तोड़ीं ● आरोप-गोतस्करों ने ट्रक से कुचला

मथुरा (एजेंसी)। मथुरा में गोरक्षक चंद्रशेखर बाबा (45) की ट्रक से कुचलकर मौत हो गई। वह फरसा वाले बाबा के नाम से मशहूर थे। घटना के बाद जमकर हंगामा हुआ। गुस्साए लोगों ने बाबा का शव रखकर हाईवे जाम कर दिया। बाबा के एक साथी ने दावा किया- शनिवार तड़के बाबा 2 साथियों के साथ ट्रक का पीछा कर रहे थे। ट्रक में गोवंश होने की सूचना थी। ट्रक को ओवरटेक कर बाबा ने सामने बाइक खड़ी कर दी। तभी अचानक ड्राइवर ने रफ्तार बढ़ा दी और बाबा को कुचलते हुए फरार हो गया। उनकी मौके पर ही मौत हो गई। हालांकि, पुलिस का कहना है कि शक के आधार पर बाबा

एक ट्रक को रोककर चेकिंग कर रहे थे। सुबह कोहरा होने की वजह से पीछे से आ रहे ट्रक ने खड़े ट्रक को टक्कर मार दी। बाबा इसकी चपेट में आ गए। ट्रक चालक भी घायल हो गया। इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। एएसपी शैलेश पांडे ने साफ किया कि ट्रकों में कोई गोवंश नहीं था। दरअसल, बाबा की मौत कोसीकलां के कोटवन थाना क्षेत्र में हुई। घटना की जानकारी इलाके में आग की तरह फैली।

साथी बोले-गोतस्करों का पीछा कर रहे थे

पहली थ्योरी बाबा के साथियों और शिष्यों ने बताई। उनके मुताबिक, बरसाना के आजनौंख गांव में गोशाला चलाने वाले फरसा वाले बाबा को सूचना मिली कि कोसी में नेशनल हाईवे पर एक ट्रक में गोवंश को भरकर ले जाए जा रहे हैं। सूचना मिलते ही बाबा दो शिष्यों के साथ बाइक से निकल गए। जब कोसी में नेशनल हाईवे पर बठन गेट इलाके में पहुंचे तो वहां गोवंश ले जाता ट्रक दिखाई दिया। बाबा ने जब ट्रक को रुकवाने का प्रयास किया तो गोतस्करों ने ट्रक की रफ्तार बढ़ा दी। करीब 7 किलोमीटर पीछा कर बाबा कोटवन चौकी क्षेत्र स्थित नवीपुर गांव पर पहुंचे। ट्रक को ओवरटेक कर बाइक से उतरे और ट्रक के सामने खड़े हो गए। इस दौरान ट्रक ने बाबा को कुचल दिया।

डेढ़ लाख की नौकरी छोड़कर बना चोर, नशे-जुए की लत की वारदात

कर्ज में डूबने के बाद उसने चोरी करने का रास्ता अपनाया

इंदौर। नशे और जुएं की लत पूरी करने युवक ने चोरी करने का रास्ता अपना लिया। वह टेलीकॉम में डेढ़ लाख की नौकरी करता था। वारदात कर वह भाग पाता, इसके पहले ही उसे लोगों ने दबोचकर पुलिस के हवाले कर दिया। एमआईजी पुलिस को नेहरू नगर निवासी जितेंद्र जैन ने बताया कि घर में 19 मार्च दोपहर करीब 3.30 बजे आरोपी दीपक मंडलोई घुस गया। बाहर की सीढ़ियों से चढ़कर अंदर पहुंचा और अलमारी से चांदी की पायल, बिछिया, सोने की अंगूठी और आर्टिफिशियल हार चुरा लिया। इसके बाद ऊपर की मंजिल पर पहुंचा, जहां महिला मौजूद थी। महिला ने उसे देख लिया और विरोध किया, जिस पर आरोपी ने उसके साथ झूमाझटकी की। शोर सुनकर महिलाओं के पति मौके पर पहुंचे तो आरोपी ने उनके साथ भी मारपीट कर दी। हंगामा सुनकर आसपास के लोग इकट्ठा हो गए और आरोपी को पकड़कर तलाशी ली तो उसके पास से चोरी का पूरा सामान बरामद हो गया। आरोपी ने पूछताछ में बताया वह फरियादी के घर के पास ही किराए से रहता था। कर्ज में डूबने के बाद उसने चोरी का रास्ता अपनाया। फिलहाल पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है और मामले की जांच जारी है।

करण औजला के शो से पहले निगम सख्त

इंदौर। शहर में पंजाबी सिंगर करण औजला के प्रस्तावित कॉन्सर्ट से पहले नगर निगम ने बड़ी कार्रवाई करते हुए कार्यक्रम स्थल से साउंड सिस्टम सहित अन्य सामग्री जब्त कर ली। बताया जा रहा है कि आयोजकों द्वारा मनोरंजन कर जमा नहीं किया गया था, जिसके चलते निगम की टीम ने मौके पर पहुंचकर कार्रवाई की। शाम को होने वाले इस शो के टिकट 3 से 6 हजार रुपये तक में बेचे जा रहे थे। कॉन्सर्ट की तैयारियों में जुटे कर्मचारी उस समय हैरान रह गए, जब निगम अमला अचानक पहुंचा और स्टेज पर लगा सामान हटाने लगा। कुछ लोगों ने विरोध भी जताया, लेकिन कार्रवाई जारी रही। नगर निगम इससे पहले मार्च 2025 में सिंगर हनी सिंह के कॉन्सर्ट में भी इसी तरह की कार्रवाई कर चुका है। वहीं दिलजीत दोसांझ के 'इलुमिनाई टूर' में भी टैक्स को लेकर विवाद सामने आया था। अब निगम ने स्पष्ट कर दिया है कि बिना कर चुकाए कोई आयोजन नहीं होगा।

कर्ज से परेशान होकर आत्महत्या की

इंदौर। चंदन नगर थाना क्षेत्र के रामानंद नगर इलाके में दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। कर्ज के दबाव से परेशान वाहन मालिक ने फांसी लगाकर जान दे दी। घटना के समय घर में बच्चे मौजूद थे, जबकि पत्नी भजन में गई हुई थी। मृतक की पहचान दुलीचंद राठौर (43) के रूप में हुई। जानकारी के मुताबिक, उन्होंने वाहन खरीदने के लिए लोन लिया था, लेकिन आर्थिक तंगी के चलते वे कई महीनों से किश्त नहीं भर पा रहे थे। बैंक की ओर से लगातार दबाव बनाए जाने से वे मानसिक तनाव में थे। शाम के समय दुलीचंद घर के पीछे बने कमरे में थे। काफी देर तक बाहर नहीं आने पर उनकी बेटी उन्हें बुलाने पहुंची। दरवाजा अंदर से बंद था। कोई जवाब नहीं मिलने पर बेटी ने दरवाजे के छेद से झांककर देखा, जहां पिता फंदे पर लटके मिले। यह देख वह घबरा गई और तुरंत मां को फोन किया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। घटनास्थल से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। दुलीचंद के परिवार में पत्नी और तीन बच्चे हैं।

बुजुर्ग महिला से चेन छीनी, घर में चोरी

इंदौर। दिनदहाड़े बुजुर्ग महिला से बदमाशों ने चेन छीन ली, वहीं दूसरी ओर घर में घुसकर नकदी चोरी की वारदात सामने आई। पहली घटना लसूड़िया थाना क्षेत्र की है। यहां 76 वर्षीय शकुंतला चौकसे सुबह पूजा का सामान लेकर घर लौट रही थीं। तभी पीछे से बाइक पर आए बदमाश ने अचानक झपट्टा मारकर सोने की चेन छीन ली और फरार हो गया। घटना इतनी तेजी से हुई कि महिला कुछ समझ ही नहीं पाई। शोर मचाने पर आसपास के लोग पहुंचे, लेकिन आरोपी तब तक भाग चुका था। बाद में परिजनों को सूचना दी गई और थाने में शिकायत दर्ज कराई गई। दूसरी घटना भंवरकुआं थाना क्षेत्र की है। यहां ज्यूस पार्लर संचालिका यशोदा चावला के घर में चोरी हो गई। जब वह अपने पार्लर पर थीं, उसी दौरान अज्ञात चोर उनके घर में घुस गया और अलमारी में रखी नकदी लेकर फरार हो गया। चोरी गई रकम व्यापार से जुड़ी बताई जा रही है, हालांकि अभी सही आंकड़ा सामने नहीं आया है। दोनों घटनाओं ने शहर की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। पुलिस ने दोनों मामलों में जांच शुरू कर दी है और आरोपियों की तलाश जारी है।

कंपनी में कार्यरत युवती से दुष्कर्म

इंदौर। टेलीकॉलर कंपनी में काम करने वाले युवती से शादी का झांसा देकर युवक ने दुष्कर्म किया। हीरानगर थाने में युवती ने कंडिलपुरा में रहने वाले अमन टिकलिया की शिकायत करते हुए बताया कि आरोपी से उसकी मुलाकात चार साल पहले पारिवारिक शादी में हुई थी। इसके बाद दोनों की इंस्टाग्राम पर बातचीत शुरू हुई और जो बाद में प्रेम संबंध में बदल गई। अगस्त 2024 में आरोपी उसे हीरानगर क्षेत्र के होटल में आया, जहां पहली बार संबंध बनाए। इसके बाद वह अलग-अलग होटलों में उसे लेकर गया। दिसंबर 2025 में आरोपी ने शादी से इंकार कर दिया। इधर, भंवरकुआं क्षेत्र में फैक्ट्री में काम करने वाली युवती ने आरोपी सतपाल चौहान निवासी पालदा की शिकायत की। पीड़िता के मुताबिक आरोपी ने एक माह पहले रास्ता रोककर पसंद करने की बात कही थी, जिसे युवती ने नजरअंदाज कर दिया। गुरुवार को 24 कैरेट फैक्ट्री के पास जबरन बात करने की कोशिश की और धमकी दी।

शराब की प्राइम लोकेशन दुकानों पर असल मुकाबला दिखाई दिया

इंदौर में शराब ठेकों की नीलामी, कई ग्रुप में सिंगल टेंडर

इंदौर। शराब दुकानों की नीलामी के पहले दौर के आंकड़े सामने आए हैं, जो लोकेशन के हिसाब से बड़ी असमानता दिखा रहे हैं। जहां कुछ प्रमुख इलाकों में जबरदस्त प्रतिस्पर्धा देखने को मिली, वहीं कई ग्रुप में ठेके लेने वालों की दिलचस्पी काफी कम रही। चार ग्रुप के ताजा आंकड़ों के मुताबिक कुल 9.06 करोड़ रुपए के रिजर्व प्राइस के मुकाबले करीब 9.32 करोड़ रुपए की बोली लगी। यानी औसतन 2.83 फीसदी का प्रीमियम मिला। सबसे ज्यादा प्रतिस्पर्धा महारानी रोड ग्रुप में रही, जहां 8 टेंडर आए और रिजर्व प्राइस से 23.5 1प्रतिशत ज्यादा बोली लगी। यह साफ संकेत है कि हाई फुटफॉल और कमर्शियल इलाकों में ठेकेदार ज्यादा निवेश करने को तैयार है।

सिर्फ एक-एक टेंडर - इसके उलट छोटी खजरानी और मालवा मिल जैसे ग्रुप में सिर्फ एक-एक टेंडर आया और बोली लगभग रिजर्व प्राइस के बराबर रही। एमजी रोड पर भी हल्की प्रतिस्पर्धा दिखी और महज 0.04 फीसदी का प्रीमियम मिला। आबकारी विभाग के पिछले ट्रेंड के अनुसार, शुरूआती चरण में टारगेट पूरा होने के बाद बचे हुए ग्रुप में ठेकेदार बड़ी बोली लगाने से बचते हैं और विभाग से राहत का इंतजार करते हैं। फिलहाल चौथे चरण में 20 में से सिर्फ 4 ग्रुप के लिए ही टेंडर आए हैं। ऐसे में संभावना है कि विभाग को यह प्रक्रिया 2-3 बार और दोहरानी पड़ेगी, तब जाकर बाकी दुकानों का आवंटन पूरा हो सकेगा।

रियल एस्टेट कारोबारी को बिश्नोई गैंग की धमकी, 15 करोड़ रूपए मांगे गए

पहले 10 करोड़ मांगे, जब फोन नहीं उठाया तो मांग 5 करोड़ बढ़ाई

इंदौर। तुकोगंज थाना क्षेत्र में रहने वाले रियल एस्टेट कारोबारी संजय जैन को कुख्यात लॉरेंस बिश्नोई गैंग ने जान से मारने की धमकी दी है। गैंग की ओर से कारोबारी को दो बार फोन करके डराया गया और भारी भरकम राशि की मांग की गई। इस घटना के बाद से व्यापारी और उनका परिवार दहशत में है। जानकारी के अनुसार, बदमाशों ने सबसे पहले संजय जैन से 10 करोड़ रुपए की रंगदारी मांगी थी। जब डरे हुए कारोबारी ने दोबारा आने वाले फोन कॉल को रिसीव नहीं किया, तो बदमाशों का दुस्साहस और बढ़ गया। अगली बार संपर्क होने पर गैंग के सदस्यों ने फोन न उठाने पर 5 करोड़ रुपए और अतिरिक्त मांग लिए। इस प्रकार अब व्यापारी से कुल 15 करोड़ रुपए की मांग की जा रही है।

केस दर्ज किया, जांच शुरू- लगातार मिल रही जान से मारने की धमकियों के बाद पीड़ित कारोबारी संजय जैन ने तुकोगंज थाने में शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए अज्ञात आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। साइबर सेल और पुलिस की टीमें उन नंबरों की जांच कर रही हैं जिनसे कॉल आए थे। पुलिस यह भी पता लगाने की कोशिश कर रही है कि यह कॉल वाकई बिश्नोई गैंग की ओर से था या किसी ने इस गैंग के नाम का इस्तेमाल कर फिरौती मांगी है।

वॉइस मैसेज भी भेजा - एडीशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया के मुताबिक, गुरुवार को संजय को धमकी भरा कॉल आया, जिसे उन्होंने तुरंत डिस्कनेक्ट कर दिया। इसके बाद उनके मोबाइल पर वॉइस मैसेज आया, जिसमें मैसेज करने वाले ने खुद को लॉरेंस गैंग का साथी और हेरी बॉक्सर बताया और 15 करोड़ रुपए की मांग की। वॉइस मैसेज में कहा गया कि रकम नहीं देने पर हत्या कर दी जाएगी। टीआई जितेंद्र यादव ने बताया कि एफआईआर दर्ज कर संबंधित नंबर की जानकारी निकाली जा रही है।

सप्ताहभर पहले महू में धमकी - महू में 13 मार्च को मेवाड़ा परिवार को फोन पर लॉरेंस बिश्नोई गैंग के नाम से धमकी मिली थी। व्यापारी से पांच करोड़ रुपये की फिरौती मांगी गई। व्यापारी ने फौरन इसकी सूचना पुलिस को दी। व्यापारी ने एडिशनल एसपी कार्यालय महू में आवेदन देकर अपनी सुरक्षा की गुहार लगाई। शिकायत मिलने के बाद किशनगंज थाने में एफआईआर दर्ज की गई, पुलिस मामले की जांच कर रही है। जानकारी के अनुसार, महू के एक अस्पताल संचालक के परिवार को कुख्यात गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई गैंग के शूटर से धमकी मिलने का मामला सामने आया है. गैंग के शूटर बताए जा रहे हैरी बॉक्सर के नाम से इंटरनेट कॉल के जरिए पांच करोड़ रुपये की फिरौती मांगे जाने की शिकायत पुलिस में दर्ज कराई गई है. परिजनों के मुताबिक, कॉल करने वाले ने बताया कि वह अमेरिका से बोल रहा है और उसने पैसे न देने पर गंभीर परिणाम भुगतने की चेतावनी दी।

संगठित अपराध की चुनौतियां

इन दोनों घटनाओं ने यह साफ कर दिया है कि प्रदेश में आर्थिक अपराध और संगठित अपराध दोनों ही गंभीर चुनौती बने हुए हैं। एक और सरकारी तंत्र में भ्रष्टाचार के मामले उजागर हो रहे हैं, तो दूसरी ओर कारोबारियों को निशाना बनाकर डराने-धमकाने की घटनाएं सामने आ रही हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई और तेज जांच ही अपराध पर अंकुश लगाने का प्रभावी तरीका हो सकता है।

खंभे से आग लगने का दावा खारिज किया, शार्ट सर्किट जैसी घटना नहीं

यदि शॉर्ट सर्किट होता तो ट्रांसफार्मर पर उसका असर दिखता

इंदौर। बृजेश्वरी एनेक्स में हुए भीषण अग्निकांड में 8 लोगों की मौत के बाद अब हादसे की असली वजह को लेकर बड़ा सवाल खड़ा हो गया है। शुरूआती जांच में जहां इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) की चार्जिंग को कारण माना जा रहा था, वहीं अब परिवार और बिजली कंपनी के बयानों के बाद मामला और उलझ गया है। कंपनी के जिम्मेदारों ने कहा, शार्ट सर्किट नहीं हुआ। पोल से आग लगने का दावा भी सिरे से खारिज कर दिया है। बिजली कंपनी के एक्जीक्यूटिव इंजीनियर डीके तिवारी, कनाड़िया ग्रिड ने कहा कि अगर खंभे में शॉर्ट सर्किट होता तो ट्रांसफार्मर पर असर दिखता। संबंधित ट्रांसफार्मर पूरी तरह सही पाया गया। केवल उसी गली की बिजली काटी गई, बाकी इलाकों में सप्लाई चालू रही। घर का लोड (8 किलोवाट) स्वीकृत सीमा (14 किलोवाट) से कम था। इससे साफ संकेत मिलता है कि बिजली लाइन या पोल से आग लगने की संभावना बेहद कम है। मृतक मनोज के बड़े बेटे सौरभ पुगलिया ने 19 मार्च को बयान देते हुए कहा था कि हादसे के समय ईवी कार चार्जिंग पर लगी ही नहीं थी। आग बिजली के खंभे में फॉल्ट से शुरू हुई। वहां से खड़ी कार और फिर घर में फैल गई। उसने यह भी कहा कि घर में इलेक्ट्रिक लॉक नहीं थे, बल्कि छत का दरवाजा बंद था जिसकी चाबी किचन में थी, जिससे लोग बाहर नहीं निकल सके।

जांच में उठ रहे सवाल- हादसे की असली वजह को लेकर कई अहम सवाल सामने हैं। क्या ईवी कार की बैटरी में अचानक आग लगी? क्या

चार्जिंग केबल या किसी वायरिंग में शॉर्ट सर्किट हुआ? क्या घर के अंदर किसी इलेक्ट्रिक पैनल से आग शुरू हुई? आग इतनी तेजी से क्यों फैली कि लोगों को निकलने का मौका नहीं मिला। पहले यह भी माना जा रहा था कि आग लगने के बाद सिलेंडर फटा, जिससे स्थिति और गंभीर हो गई। घर के अंदर फंसे लोग बाहर नहीं निकल सके। हालांकि परिवार ने इलेक्ट्रिक लॉक वाली बात से इनकार किया है।

फायर ब्रिगेड पर सवाल- परिवार और स्थानीय लोगों ने राहत कार्यों पर भी नाराजगी जताई। कॉल के बावजूद दमकल की गाड़ी देर से पहुंची। पहली गाड़ी में पानी कम था। टैंकर को पहुंचने में अतिरिक्त समय लगा। मौके पर समन्वय की कमी रही। इस बारे में प्रभारी फायर ब्रिगेड, गांधी हॉल, सुशील दुबे ने बताया कि घटना के बाद 30 मिनट में पहुंच गए थे। टैंकर कभी खाली नहीं रहते। फोन आते ही तत्काल गांधी हॉल से दो गाड़ियां रवाना कर दी गई थी।

कांग्रेस की शहर कार्यकारिणी में 52 पदाधिकारी, महिलाएं नहीं

भाजपा ने कहा, महिलाओं को जगह नहीं, कांग्रेस महिला विरोधी

इंदौर। सात साल बाद कांग्रेस की इंदौर शहर कार्यकारिणी का गठन हो गया। शहर कांग्रेस अध्यक्ष चिंटू चौकसे की अगुवाई में यह नई टीम घोषित की गई है, जिसमें कुल 52 पदाधिकारियों को जगह दी गई है। यह संख्या पिछली महा जंबो कार्यकारिणी (2019 में भंग हुई) से काफी कम रखी गई। बाकलीवाल के बाद एक दिन के लिए अरविंद बागड़ी और फिर सुरजीत सिंह चड्ढा शहर अध्यक्ष बने, लेकिन इंदौर शहर कार्यकारिणी का गठन नहीं हुआ। अब चिंटू चौकसे के अध्यक्ष बनने के बाद कमेटी का गठन हुआ है। कांग्रेस कार्यकारिणी में शहर के पूर्व विधायकों व अन्य बड़े नेताओं के समर्थकों को जगह दी गई है। इस बार इस संख्या को काफी सीमित रखा गया है। कार्यकारिणी में कुल 52 पदाधिकारी हैं। इसमें कोषाध्यक्ष शैलेश गर्ग बने हैं। वहीं 10 उपाध्यक्ष, 18 महामंत्री, 19 सचिव, दो प्रवक्ता (लोकेश हार्डिया व दीपू चौहान) और दो सोशल मीडिया प्रभारी (नागेश जाधव व हितेश वर्मा) बने हैं।

भाजपा की प्रतिक्रिया

इधर, भाजपा शहर अध्यक्ष सुमित मिश्रा ने इस कमेटी पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि इंदौर, जो देवी अहिल्या के नाम से जानी जाती है, वहां कांग्रेस ने अपनी कार्यकारिणी में एक भी महिला को जगह नहीं दी। इससे कांग्रेस महिला-विरोधी साबित हुई है। मिश्रा ने कहा कि 'लाड़ली बहना योजना' का विरोध करते-करते कांग्रेस महिला-विरोधी बन गई है। प्रदेश की माताओं-बहनों को शराबी कहकर अपमानित करने वाली कांग्रेस को अपनी महिला इकाई भी भंग कर देनी चाहिए। मातृशक्ति का अपमान कांग्रेस की फितरत बन गई है।

यह है उपाध्यक्ष, महामंत्री और सचिव

उपाध्यक्षः प्रवेश यादव, बलराम परिहार, अंकित धवन, कमल नागर, जगदीश सतैया, गुलाब सोनकर, मित्रा भाटिया, सत्यनारायण सवाड़िया, गोपी यादव गोविंद परिहार है।

महामंत्रीः नरेश यादव, अजित ठाकुर, संजय जायसवाल, अभिजीत शर्मा, मुकेश पुरी, समीर शेख, जितेंद्र घोड़गांवकर, हरिओम शर्मा, विजेंद्र सिंह, विनोद चौकसे जेनेश झांझरी, आरबी सिंह भदौरिया, सौरभ हार्डिया, मुकेश यादव, भूपेंद्र सलूजा, अभिषेक मित्तल, संतोष वर्मा, कपिल हेडऊ।

सचिवः सुधीर सोनी, राजेश मेवाड़ा, रोहन तावेड़ा, नमन छाबड़ा, जितेश बदलानी, कन्हैया मिमरोट, ऋतुराज कनखेड़िया, कपिल प्रजापत, आशीष यादव, आयाज गुड्डु, विशाल जोसफ, राहुल गोलाने, कपिल नेगी, इरफान शेख, अख्तर नेता, अनस अहमद, सुधीर सिंह, अभिषेक करोसिया और सदफ पठान।

5 जिलाबदर, 11 को थाना हाजिरी के आदेश

इंदौर। आगामी त्योहारों को ध्यान में रखते हुए पुलिस ने शहर और आसपास के इलाकों में अपराध पर नियंत्रण के लिए सक्रिय कदम उठाए हैं। पुलिस आयुक्त के निर्देश पर 16 आदतन अपराधियों के खिलाफ प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए गए हैं। इनमें से 5 कुख्यात बदमाशों रोहित उर्फ काला, शुभम उर्फ जला, राज, पुनीत और साहिल उर्फ चेरी को 3 से 6 महीने की अवधि के लिए जिला बदर किया है। जबकि, 11 अन्य शातिर बदमाशों को थाना हाजरी के लिए निर्बंधन आदेश के तहत पाबंद किया गया है। इन अपराधियों को तय समय पर संबंधित थाने में हाजिरी देनी होगी और किसी भी अवैध गतिविधि या शहर की शांति भंग करने से रोकने के लिए प्रतिबंधित किया गया है। पुलिस ने बताया कि ये सभी अपराधी आदतन अपराधी हैं और इनके खिलाफ शहर के विभिन्न थानों में कई गंभीर अपराध दर्ज हैं। अगर ये आदेशों का उल्लंघन करते हैं तो उनके खिलाफ तुरंत वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

सिलेंडर की पर्याप्त आपूर्ति के लिए कलेक्टर ने आपूर्ति की समीक्षा की

सिलेंडरों की होम डिलीवरी सामान्य दिनों की तुलना में रिकॉर्ड

इंदौर। जिले में घरेलू गैस सिलेंडरों की आपूर्ति व्यवस्था सुदृढ़ बनी हुई है। कलेक्टर शिवम वर्मा ने गत 10 दिनों में घरेलू सिलेंडर आपूर्ति एवं प्राप्त शिकायतों के निराकरण की समीक्षा के लिए शुक्रवार को रेसीडेंसी कोठी में बैठक आयोजित की गई। बैठक में इंडियन ऑयल, हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन तथा भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन के सेल्स अधिकारी, खाद्य एवं आपूर्ति विभाग के अधिकारी तथा गैस एजेंसियों के डीलर उपस्थित रहे। समीक्षा के दौरान पाया गया कि पिछले 10 दिनों में घरेलू उपभोक्ताओं को लगभग 3 लाख 63 हजार गैस सिलेंडरों की होम डिलीवरी की गई, जो सामान्य दिनों की तुलना में एक रिकॉर्ड है। सामान्यतः इसी अवधि में लगभग 2 लाख 60 हजार सिलेंडरों की आपूर्ति होती है। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि अस्पतालों एवं शैक्षणिक संस्थानों को, जिन्हें कमर्शियल सिलेंडर के लिए विशेष छूट प्रदान की गई है, उनकी आपूर्ति निर्बाध रूप से जारी रहे। साथ ही

एसवी कनेक्शन, गैस बैंक एवं मैनिफोल्ड प्रणाली के अनुरूप ही सिलेंडरों का वितरण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने सभी ऑयल कंपनियों को निर्देशित किया कि हेल्पलाइन पर प्राप्त शिकायतों का निराकरण हर हाल में 24 घंटे के भीतर किया जाए तथा इसकी दैनिक रिपोर्ट जिला आपूर्ति कार्यालय को उपलब्ध कराई जाए।

बैठक में अवंतिका गैस पाइपलाइन के माध्यम से दिए जा रहे कनेक्शनों की भी समीक्षा की गई। जानकारी दी गई कि पिछले 10 दिनों में लगभग 600 घरेलू एवं 111 कमर्शियल पाइपलाइन कनेक्शन प्रदान किए गए हैं। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि जहां-जहां पाइपलाइन उपलब्ध है, वहां प्राथमिकता से कनेक्शन देकर सिलेंडर निर्भरता कम की जाए। साथ ही आवेदन के एक सप्ताह के भीतर कनेक्शन प्रदान करने की प्रक्रिया को और तेज किया जाए। आपूर्ति विभाग द्वारा गत 10 दिनों में 92 प्रकरण दर्ज कर लगभग 300 सिलेंडर जब्त किए गए हैं तथा कुछ मामलों में अभियोजन की कार्रवाई भी की गई है। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि इस प्रकार की कार्रवाई निरंतर जारी रखी जाए तथा शिकायतों के त्वरित निराकरण पर विशेष ध्यान दिया जाए।

आगजनी मामले में एक दर्जन लोगों के बयान, सब धमाका सुनकर जागे

घर में एक दर्जन से अधिक कमर्शियल गैस सिलेंडर रखे मिले

इंदौर। तिलक नगर थाना क्षेत्र के ब्रजेश्वरी एनएक्स स्थित अर्हम विला में हुए भीषण अग्निकांड ने पूरे शहर को हिलाकर रख दिया। इस हादसे में पॉलिमर कारोबारी मनोज पुगलिया परिवार के 8 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई थी। घटना के बाद पुलिस ने जांच तेज कर दी है और अब तक एक दर्जन से अधिक लोगों के बयान दर्ज किए जा चुके हैं। परिवार के प्रमुख सदस्यों से भी पूछताछ होने की संभावना है।

पुलिस की प्रारंभिक जांच में आग लगने की वजह शॉर्ट सर्किट मानी जा रही है। मौके पर पहुंची ईवी एक्सपर्ट टीम ने घर में खड़ी कार की बारीकी से जांच की बोनट खोलकर निरीक्षण किया गया और अलग-अलग एंगल से फोटो व वीडियो भी लिए गए। जहां प्रत्यक्षदर्शी बिजली के पोल से आग लगने की बात कर रहे हैं, वहीं बिजली विभाग ने वीडियो जारी कर दावा किया कि आग ईवी कार से शुरू हुई थी और पोल से शॉर्ट सर्किट की संभावना से इनकार किया है। अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त (जोन 2)

अमरेन्द्र सिंह के मुताबिक, अभी तक शॉर्ट सर्किट ही मुख्य कारण सामने आया है, लेकिन सभी एंगल से जांच जारी है। प्रत्यक्षदर्शी भरत जैन ने बताया कि बिजली के तारों से लगातार चिंगारियां गिर रही थी और पटाखों जैसी आवाजें आ रही थीं। कई लोगों ने यह भी कहा कि आग पहले बिजली के पोल से शुरू होकर वाहनों तक फैली। पड़ोसी दीपक शर्मा ने कहा कि घटना के बाद मैंने साहस दिखाते हुए परिवार के कुछ सदस्यों को छत से निकालकर बचाया। उनके अलावा अन्य पड़ोसियों सुरेन्द्र नागर, सोनू वर्मा और बचाव कार्य में शामिल लोगों से भी पुलिस ने अलग-अलग बिंदुओं पर पूछताछ की है।

परिवार के बयान अहम- घटना के समय मनोज पुगलिया, उनकी पत्नी सुनीता और बेटे सौरभ जाग चुके थे और आग बुझाने की कोशिश कर रहे थे। बहू सिमरन को बचाने के प्रयास में मनोज खुद फंस गए। धुआं तेजी से फैलने के कारण दोनों के शव ऊपरी मंजिल पर मिले। अब पुलिस यह जानने की कोशिश करेगी कि सबसे पहले आग किसने और कहां देखी। परिवार के बयान से घटना की पूरी सच्चाई सामने आने की उम्मीद है।

सिलेंडर ब्लास्ट से तबाही

जांच में यह भी सामने आया है कि घर में एक दर्जन से अधिक कमर्शियल गैस सिलेंडर रखे थे। आग लगने के दौरान बिजली कनेक्शन चालू था, जिससे पानी डालते ही करंट फैल गया और कुछ फायरकर्मी भी इसकी चपेट में आ गए, हालांकि वे सुरक्षित बच गए। बाद में सिलेंडरों में विस्फोट हुआ, जिससे आग और भी भयानक हो गई। अब प्रशासन यह जांच कर रहा है कि घर में इतने कमर्शियल सिलेंडर क्यों रखे गए थे।

अनुभव

बृजेश प्रसाद
लेखक शोधार्थी हैं।

माँ और फसल

इस वर्ष मॉनसून समय पर नहीं आया। धान की बुआई के समय बारिश की देर ने खेती की पूरी लय को बिगाड़ दिया। किसानों ने धान तो बो दिया, परंतु समय पर पानी न मिलने के कारण उसकी वृद्धि प्रभावित हुई। जब तक मॉनसून पूरी तरह सक्रिय हुआ, तब तक खेती की गति पहले ही धीमी पड़ चुकी थी। इसका प्रभाव आगे चलकर गेहूँ की बुआई पर भी पड़ा। धान की कटाई में देरी हुई और परिणामस्वरूप गेहूँ की बुआई भी देर से हो पाई। खेती की इस समय-श्रृंखला में आई छोटी-सी देरी ने फसल की गुणवत्ता और उत्पादन दोनों को प्रभावित किया। इस प्रकार, मौसम की अनिश्चितता ने किसानों की मेहनत पर एक तरह से प्रश्नचिह्न लगा दिया।

गाँव की मिट्टी में एक अलग ही सुगंध होती है - मेहनत की, उम्मीद की और जीवन की सादगी की। कुछ दिनों पहले जब मैं गाँव गया, तो स्वाभाविक ही मेरे कदम खेत-खलिहानों की ओर बढ़ गए। खेतों की पगडंडियों पर चलते हुए गाँव-ज्वार के लोगों से मुलाकात हुई। बातचीत के दौरान यह महसूस हुआ कि इस बार गाँव के लोगों के चेहरों पर पहले जैसी संतुष्टि नहीं है। उनके मन में अपनी फसल को लेकर एक हल्की-सी निराशा दिखाई दे रही थी।

दरअसल, इस वर्ष मॉनसून समय पर नहीं आया। धान की बुआई के समय बारिश की देर ने खेती की पूरी लय को बिगाड़ दिया। किसानों ने धान तो बो दिया, परंतु समय पर पानी न मिलने के कारण उसकी वृद्धि प्रभावित हुई। जब तक मॉनसून पूरी तरह सक्रिय हुआ, तब तक खेती की गति पहले ही धीमी पड़ चुकी थी। इसका प्रभाव आगे चलकर गेहूँ की बुआई पर भी पड़ा। धान की कटाई में देरी हुई और परिणामस्वरूप गेहूँ की बुआई भी देर से हो पाई। खेती की इस समय-श्रृंखला में आई छोटी-सी देरी ने फसल की गुणवत्ता और उत्पादन दोनों को प्रभावित किया। इस प्रकार, मौसम की अनिश्चितता ने किसानों की मेहनत पर एक तरह से प्रश्नचिह्न लगा दिया।

जब माँ खेतों से लौटती तो उसके चेहरे पर एक गहरी थकान के साथ हल्की-सी उदासी भी दिखाई दे रही थी। पूछा तो उसने कहा कि ÷पैसा-कौड़ी की बात त नइखे, लेकिन ई बार के मेहनत जैसे बेकार चल गईल।÷ यह बात सुनकर मन भीतर तक छू गया। जितना मैं माँ को जनता हूँ, उसका हमेशा से विश्वास मेहनत पर रहा है, पैसे पर नहीं। उसके लिए खेत केवल आजीविका का साधन नहीं है, बल्कि जीवन का आधार भी हैं। परंतु बदलते मौसम और अनिश्चित मॉनसून ने ग्रामीण जीवन को, विशेषकर किसानों को गहराई से प्रभावित किया है।

माँ हर रोज़ खेतों की ओर जाती है और लौटते समय मेरे लिए कुछ-न-कुछ लेकर

आती है - कभी ताज़ी मटर, कभी हरा साग, टमाटर तो कभी धनिए की सुगंधित पत्तियाँ। ऐसा लगता है जैसे इन कुछ दिनों में ही वह अपने खेतों की सारी उपज और अपने स्नेह को मुझे खिलाकर संतोष पा लेना चाहती है। माँ की आँखों में हमेशा अपने बच्चों के लिए एक अटूट विश्वास और उम्मीद रहती है।

इन दिनों मेरे जीवन में भी संघर्ष का दौर चल रहा है। रोज़गार की तलाश और परिवार की जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश जारी है। ऐसे समय में माँ की बातें ही मेरे लिए सबसे बड़ा संबल बनती है। वह समझाते हुए कहती है - बाबू, खाये-पिए में कभी कोताही मत करीह, अभी हम लोग जिंदा बानी। तु बस आपन प्रयास जारी रखह, कामयाबी देर-सबेर जरूर मिली। हमरे लगे खेत बा, फसल होत बा। तोहर पापा भी दू-चार पैसा कमा ही लेत बानीं। तु हमनी के चिंता मत करिह, बस आपन पढ़ाई और मेहनत पर ध्यान दिहल करिह...

माँ की यह सादगी भरी बातें मन में आश्वस्ति से भर देती हैं। जब वापस लौटने का समय आता है, तो माँ मेरे लिए एक छोटी-सी गठरी बाँधने लगती है। उस गठरी में नमक, तेल, मसाले, चावल और आटे के साथ मूँगफली, मटर और न जाने कितनी छोटी-छोटी चीजें बाँध देती है। देखने में वह गठरी भले ही छोटी हो पर उसके भीतर माँ का स्नेह, उसका विश्वास और उसके आशीर्वाद की अनंत ऊष्मा समाई रहती है।

वास्तव में उस छोटी-सी गठरी में केवल घर का सामान नहीं होता, बल्कि माँ की ममता, गाँव की मिट्टी की खुशबू और जीवन के संघर्षों से लड़ने का साहस भी बँधा होता है। माँ और फसल दोनों ही जीवन के आधार हैं। एक पेट भरती है, तो दूसरी मन को संबल देती है।?

यात्रा शुरू होते ही हमारे प्रिय लोककवि राकेश कबीर की कविता 'माँ अब भी जोहती है' स्मृतियों में तैरने लगती है

माँ अब भी जोहती है
ऐसा नहीं है कि माँ को कोई दुःख है
लेकिन जब घर जाकर वापस लौटता हूँ
माँ रोती है
माँ तब भी रोई थी
अपने नीम के पेड़ के नीचे खड़े होकर
अपने घुँघट में आँसुओ को छुपाकर
उस दूर कोने तक जहाँ से मुड़ने के बाद
माँ नहीं दिखती थी
हममें हिम्मत नहीं थी कि मुड़के देख सकें माँ को
माँ हर बार रोती थी
गठरियों में बाँधते हुए चावल आटा और दाल
शहर पहुँचते ही
दीवार में टंगे कैलेंडर की तारीखों में
खिंच जाता था एक गोला
अगली बार कब जाना है
माँ से मिलने
यह जानते हुए भी कि माँ फिर रोएगी
माँ एक-एक कर हमको भेजती रही शहर
और रोती रहती है हर बार
हमको विदा करके।

कविता

मैने तुमको पढ़ा है जैसे

सीमा देवेन्द्र

आंखो से तुम वो कह देते
जो कुछ कहना सही नही
चांद चकोरी अवनी अम्बर
सी दूरी भी सही नहीं।

इतने रंग देखे आंखो में
इतने तो है कंही नहीं
झूम रहे है फाग बसंत
इन्द्र धनुष वो कहीं नहीं।

अधरों की भाषा अलग थी
शब्द झरे थे वहीं कहीं
चूमें थे वो इक इक अक्षर
जैसे मधु भी वहीं कहीं।

हर धड़कन हिरदय पट खोले
मधुर मिलन का आमंत्रण
प्रेम काव्य की खुली पत्रिका
हो तुम जैसे कोई नहीं।

मैंने तुमको पढ़ा है जैसे
तुम भी मुझको पढ़ डालो
भाव व्यक्त की सीमा है प्रिय
प्रीत भी ऐसी कहीं नहीं।

लघुकथा

डरेंगे तो जीएंगे कैसे

कुसुम जैन, शाजापुर

कालोनी में मेरे घर के सामने खाली पलाट पर चौकीदार ने पतरो से अपनी झोपड़ी बना ली है। उसकी पत्नी कविता मेरे तथा आस पास के घरों में बर्तन मांझने का काम करती है। तीन चार दिनों से लगातार बारिश होने से झोपड़ी के चारों ओर कीचड़ तथा पानी जमा हो गया था। जब तब सांप बिच्छू, कनखजूरे, मेंढक आदि निकलते रहते थे। पक्के मकान और सुरक्षित खिड़की-दरवाजों के बावजूद भी हम हमेशा चिंतित रहते थे।

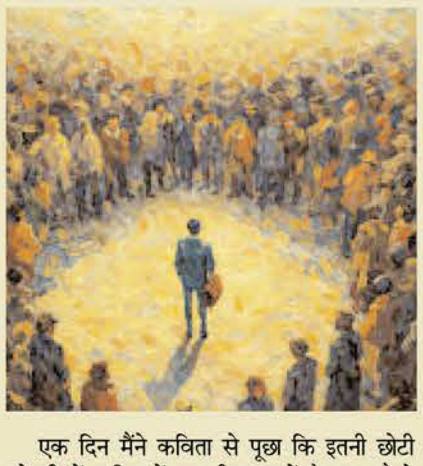

एक दिन मैंने कविता से पूछा कि इतनी छोटी झोपड़ी में बारिश में तुम तीन बच्चों के साथ कैसे एडजस्ट करती हो? घर- गृहस्थी का सामान, बच्चों की पढ़ाई, कपड़े, जूते मौजे और जाने कितनी चीजें और ऊपर से इन जीव जंतुओं का आतंक। तुम्हें डर नहीं लगता?

वह बोली- डरेंगे तो जीएगें कैसे? रात में हम कपड़ा जला कर सोते हैं। कहते है कि जले कपड़े की गंध से ये जीव जंतु घर में नहीं आते। सच में गरीबी, ममत्व, जिम्मेदारी, और साहस के साथ बच्चों को पढाने का सपना सब कुछ सिखा देता है।

विचार

उमा त्रिवेदी

प्रगति की ओर बढ़ते हमारे कदम

समय निरंतर परिवर्तनशील है और इसी परिवर्तन की कोख से जन्म लेता है–'नया आकाश'। यह नया आकाश मात्र एक कल्पना नहीं, बल्कि हमारे उन सपनों का विस्तार है जिन्हें हम अपनी मेहनत, तकनीक और अटूट संकल्प से सच कर रहे हैं। आज भारत और संपूर्ण विश्व जिस दिशा में अग्रसर है, वह पुरानी सीमाओं को लांघकर एक नई ऊँचाई छूने की कहानी है।

जब हम प्रगति की बात करते हैं, तो इसका अर्थ केवल ऊँची इमारतें या चौड़ी सड़कें नहीं होता। इसका असली अर्थ है सोच का विस्तार याने सीमाओं से परे एक नई उड़ान आज का मुक्त 'नया आकाश' तकनीक और मानवता के संगम से बना है। डिजिटल क्रांति ने दूरियों को समाप्त कर दिया है। आज गाँव के किसी छोटे से कोने में बैठा युवा भी दुनिया भर के ज्ञान तक पहुँच रखता है। यह ज्ञान का लोकतांत्रीकरण ही वह सीढ़ी है, जो हमें इस नए आकाश की ओर ले जा रही है।

प्रगति के इस सफर में विज्ञान हमारा सबसे बड़ा सारथी है। अंतरिक्ष विज्ञान में हमारी उपलब्धियाँ, जैसे चंद्रयान और मंगलयान, इस बात का प्रमाण हैं कि अब आसमान हमारे लिए कोई सीमा नहीं रह गया है इससे साफ जाहिर होता है कि तकनीक और नवाचार का उदय हुआ है

हम अब उस युग में हैं जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और सतत ऊर्जा (Sustainable Energy) हमारे भविष्य की रूपरेखा तैयार कर रहे हैं। सौर ऊर्जा और हरित हाइड्रोजन के क्षेत्र में बढ़ते कदम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि हमारा 'नया आकाश' न केवल उज्ज्वल हो, बल्कि स्वच्छ और सुरक्षित भी हो।

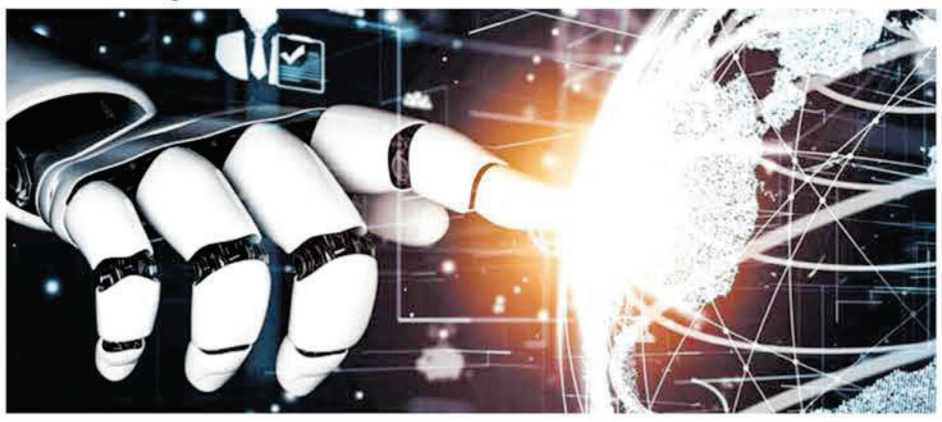

सच्ची प्रगति वही है जो समाज के अंतिम व्यक्ति को अपने साथ लेकर चले याने सामाजिक समावेश और आत्मनिर्भरता पर जोर दे आज शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी सुविधाओं का विस्तार जिस गति से हो रहा है, वह एक समावेशी भविष्य की नींव रख रहा है। 'आत्मनिर्भरता' का भाव आज के युवाओं के रग-रग में है। स्टार्टअप संस्कृति ने यह सिद्ध कर दिया है कि हम अब केवल नौकरी खोजने वाले नहीं, बल्कि नौकरी देने वाले बन रहे हैं। यह आत्मविश्वास ही वह पंख है, जिसके दम पर हम इस नए आकाश में ऊंची उड़ान भर रहे हैं।

अर्थात नया आकाश पुकार रहा है चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए, नवाचार को गले लगाने के लिए और एक बेहतर कल के निर्माण के लिए।

हमारी प्रगति के ये कदम तब तक नहीं रुकेंगे जब तक हम एक ऐसे समाज का निर्माण नहीं कर लेते जहाँ हर व्यक्ति के पास अपने सपनों को पूरा करने का समान अवसर हो। यह यात्रा लंबी है, लेकिन हमारे इरादे इस आकाश से भी ऊँचे हैं।

मंजिलें उन्हीं को मिलती हैं, जिनके सपनों में जान होती है, पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।

ग़ज़ल

महताब आया ले के

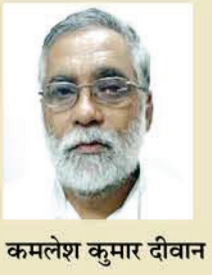

कमलेश कुमार दीवान

मुझको ख्याल ने कुछ ऐसे दिए हैं ख्वाब
महताब आया ले के चांदनी का भी हिसाब।

उसने बताया रात के उजले पहर के दाम
थोड़ा समझ गया मैं उस चांदनी का भाव।

दिन धूप मिल रही अभी बारह माह की
उस की कीमतें भी बताएगा आफताब।

कुछ दिन में हवाएं पहाड़ नदियां घाटियां
करती मिलेंगी यहां वहां सब से भाव ताव।

लब ए साहिल पे नाव है ख्याल में 'दीवान '
हर ओर अंधेरा है और आसपास मेरे आब।

पुस्तक समीक्षा

प्रमोद भार्गव

समीक्षा

वैचारिक जड़ता को तोड़ती कविताएं

नई सदी के बीते इन पच्चीस सालों में बहुत कुछ बदला है। इस बदलाव में अंतर्जाल में प्रकट होने वाले सोशल मीडिया की अहम् भूमिका रही है। इस धारा के प्रबल प्रवाह में रचनाकार और रचनाएं भी मुख्य धारा में आ गईं, जो किसी वैचारिक खूंटे की बंधुआ नहीं थीं। इस कड़ी में शशिकला त्रिपाठी का 'फूल तो खिलेंगे ही' जैसे रूमानी शीर्षक वाला काव्य-संकलन मेरे देखने-पढ़ने में आया। कोई पुस्तक पढ़ने से पहले मैं लेखक के आत्म-कथ्य या भूमिका को पढ़ता हूं, जिससे रचना-प्रक्रिया का अभीष्ट लक्षित हो जाए। यह लक्ष्य तब और अभिप्रेरित करता है, जब उसमें तार्किक रूप में जड़ता तोड़ने के क्रांतिकारी बदलाव दृष्टिगोचर हों ?

लेखिका कविता के आविर्भाव के संबंध में प्रचलित मान्यता के विपरीत लिखती हैं, 'कविता दुख से उपजती है, यह पूर्ण सत्य नहीं है। प्राकृतिक और मानवीय सौंदर्य से भी व्यक्ति अभिभूत होता है। कवियों के लिए तो प्राकृतिक उपादान ही सर्वाधिक उर्वर प्रदेश रहें हैं।' वे इसी परिप्रोक्ष्य में आगे लिखती हैं, 'प्रतिकूल परिस्थितियां मानसिक पीड़ा देती हैं और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की इच्छा बलवती हो जाती है। जाहिर है, संवेदना के तीव्र उद्रेक से ही सहानुभूति कविता की शक्ल अख्तियार करती है।

इस संकलन में उन सभी मुद्दों पर कविताएं व्यक्त हैं, जिन्हें राजनेता जन-आंदोलन का रूप देते हैं। किसान और युवा प्रत्येक कालखंड में मुद्दागत राजनीति के केंद्र में रहे हैं। अन्नदाता की बद्हाली और युवाओं की बेरोजगारी देश की सबसे बड़ी समस्याएं हैं। किसान को समस्या मुक्त करने की दृष्टि से बड़े आर्थिक पैकेज बुंदेलखंड और विदर्भ में लाए गए, परंतु किसान आत्महत्याएं इस तथ्य की पुष्टि हैं कि बद्हाली यथावत है। स्टार्टअप, स्टैंडअप के उपायों के साथ हजारों की संख्या में प्रधानमंत्री द्वारा बांटे गए नियुक्ति पत्रों के बावजूद बेरोजगारी सुरसा-मुख ती तरह बढ़ रही है।

संग्रह में 'फांसी दो' और 'संदेशखाली' ऐसी कविताएं हैं, जो स्त्री दुराचार को सामने लाती हैं। एक नहीं कई सत्य घटनाओं पर आधृत इन कविताओं में लेखिका द्वारा सृजित वर्णन दर्दनाक दुराचार भोगती-सहती स्त्री का आंखों देखा हाल सा चित्रण है। प्रस्तुति को जटिल बनाने की दृष्टि से इन कविताओं में न तो कोई भाषाई क्लिष्टता है और न ही भाव-प्रवणता। लेखिका की काव्यमयी रिपोर्टिंग देखिए, 'हिंसक जानवर खेत की मानिंद/ स्त्री देह को/नोचते, खसोटते/करते हैं पूर्ण तहस-नहस। जननांग क्षत-विक्षत। शेष न रहे कोई निशान/मानो, लड़की इंसान नहीं/प्लास्टिक की गुड़िया हो/ खेला, तोड़ा और फेंक दिया।'

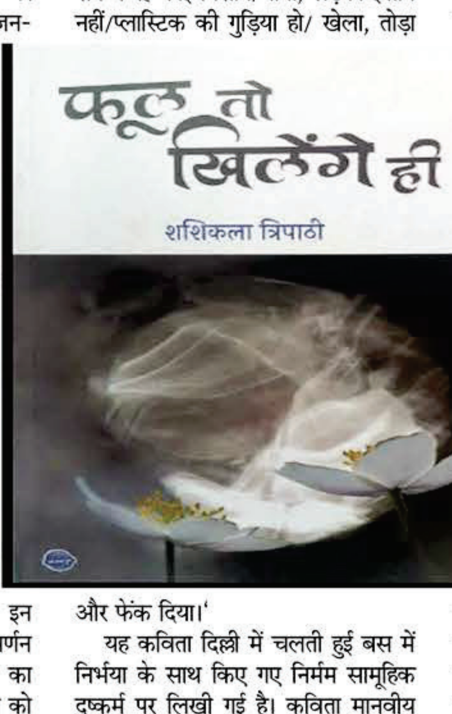

यह कविता दिल्ली में चलती हुई बस में निर्भया के साथ किए गए निर्मम सामूहिक दुष्कर्म पर लिखी गई है। कविता मानवीय मूल्यों के हनन की चरम पराकाष्ठा है। समुदाय, जीवन को उद्दात्त आयाम देने का काम करता है। परंतु यहां समूह खाली बस में मित्र के साथ अकेली लड़की देखकर यौनिक स्वच्छंद हिंसा में बदलता चला गया। इसमें एक नाबालिक भी शामिल रहा था। सामुदायिक हिंसक यौनिकता का अंत तमाम विरोधों के बाद लाए गए कानून के उपरांत भी नहीं होता। हैदराबाद और कोलकाता में भी इसी प्रकृति के क्रूरतम दुष्कर्मों की पुनरावृत्ति महिला चिकित्सकों के साथ होती है। हैरानी इस बात पर भी होती है कि कोलकाता के चिकित्सा महाविद्यालय में उच्च शिक्षित चिकित्सक ही दुराचार को अंजाम देते हैं। यानी मनुश्य की नजर में स्त्री, देह मात्र है। अर्थात समूह कम पढ़ा या फिर उच्च शिक्षित हो, सभ्यतागत उसकी मानसिकता स्याह ही बनी रहती है।

वैचारिक जड़ता से मुक्ति के गीत गाने वाले कवियों की गूंज आजकल देश की दशों दिशाओं में गूंजती दिख रही है।इसमें एक आवाज शशिकला त्रिपाठी का यह संग्रह भी बना है।इसमें काशी यानी बनारस में हो रहे धर्म से जुड़े प्रवक्ताओं में क्रांतिकारी बदलाव की बुलंद ध्वनि परिलक्षित है।'समय नहीं ठहरता' कविता में इसकी प्रखर एवं सार्थक गूंज है, 'काशी वेद-वेदांत की भूमि/ नित्य होती अध्यात्म की खेती/ बटुक परिश्रम करते जमकर/अब उन्होंने सिख लिया है/कंप्यूटर-ज्ञान क से ज्ञ तक /इसलिए,विमानों पर चढ़कर/पहुंच रहे वे यूरोपीय देशों में/भारतीय ज्ञान का परचम फहराने /भारतवंशी जहां-जहां बसे हैं/हुआ है शंखनाद एकता का/हम वसुधा के एक परिवार।'इसी तरह 'गोदौलिया चौराहा' कविता में साझा संस्कृति की कल्याणकारी प्रतिध्वनि की वैश्विक गूंज है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि स्त्रियों के प्रति रूढ़िवादी नजरिए में व्यापक बदलाव आया है। जिसे समाज स्वीकार भी रहा है। यह स्वस्थ एवं लोकतांत्रिक समाज के लिए अपेक्षित भी है। स्त्री सशक्तिकरण का मार्ग ऐसे ही दृष्टिकोण से प्रशस्त होता है। लेकिन शशिकला त्रिपाठी के रचनाकर्म में स्त्री की उपस्थिति की जहां रचनात्क एवं उत्प्रेरक छवियां व प्रवृत्तियां परिलक्षित हैं, वहीं स्त्री जीवन की अभिशप्त उपस्थिति क्रूर हिंसा के चरम तक है। इनमें प्रक्षिप्त संदेश उस स्त्री के लिए चेतावनी है, जो अविवाहित रहते हुए तात्कालिक देह-सुख हेतु किसी भी मर्यादा को लांघने को तत्पर हो जाती है। इस तरह के स्वछंद उल्लंघन के सिलसिले में स्त्री को सोचने की जरूरत है कि अंततः वर्जनाहीन सामाजिक जीवन को स्वीकारने में पुरुष ही ज्यादा लाभान्वित होता है। स्त्री नहीं।

काव्यः संग्रह का नामः फूल तो खिलेंगे ही
कवयित्रीः शशिकला त्रिपाठी
प्रकाशकः सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
मूल्य:295 रुपए।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.- 453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

रवींद्रनाथ टैगोर की स्वच्छंद कलाकृतियाँ और कला में आधुनिक सोच

कला हमेशा से एक पहेली रही है और हमेशा पहेली ही रहेगी। कला में यात्रा का आनंद भी तभी तक है जब तक वो पहेली है। पहेली से पर्दा उठते ही कला अपने अस्तित्व और पहचान को तड़प उठती है। जैसा की सभी को पता है कि भारतीय कला मौसम की भांति अपनी यात्रा तय करती हुई प्रतीत होती है जहाँ पतझड़ है तो बसंत भी है, जहाँ आनंद है तो अभिव्यक्ति को व्याकुल तड़प भी है, कलाकार का संघर्ष भी है। कलाकार, साहित्यकार या और भी अभिव्यक्ति के द्वंद्व से जूझते माध्यम वाले लोग जो ललित कला के मानकों को पूरा करते हैं, एक दूसरे से भिन्न नहीं हो सकते। कभी-कभी कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपनी बात, अपने भाव को एक माध्यम में अभिव्यक्त कर लेने के बाद भी तड़प रहे होते हैं,

मानवीय भावनाओं को अभिव्यक्त करने हेतु कई दफा एक माध्यम कम पड़ जाता है, सर्जक अपनी बात अपने रनिंग माध्यम में पूरी तरह नहीं कह पाता या कह तो पाता है पर संतुष्ट नहीं हो पाता, कहीं और पहुँच कर छटपटाहट में ही सही पर अपनी बात बहुत ही स्पष्ट तरीके से कहना चाहता है और एक साथ कई माध्यमों में सक्रिय हो जाता है और कभी-कभी उसे साध पाने में सफल भी हो जाता है पर सभी सफल होंगे संशय युक्त है। रवींद्रनाथ टैगोर के साहित्य ने लोगों को आकर्षित तो किया ही, बेचैन भी किया पर साहित्य और अन्य माध्यमों को साध लेने के बाद भी वो बेचैन ही रहे। एक साथ कई माध्यमों को साध पाना उनकी विशेषता रही है पर असंतुष्टि उन्हें और भी द्वार खोलने हेतु प्रेरित करती रही। रवींद्रनाथ टैगोर के साहित्य से तो समाज वाकिफ है पर उन्हीं का एक रूप जो कलाकार के रूप में फला-फूला पर चर्चा का इरादा है। साहित्य, संस्कृति एवं कला संपन्नता से भरापुरा परिवार, प्रकृति के गहराई को गहनता से आत्मसात करने वाला घर, नैसर्गिकता के सान्निध्य में रहन-सहन और अंकन के साथ ही तमाम दर्शनों पर पक्ष-विपक्ष दोनों स्तरों पर लगातार चर्चा होना, नये-नये विषयों को नये तरीकों से समझना, विदेशी कलाकारों - साहित्यकारों का घर पर आना जाना निरंतर जारी था। गुरुदेव विधाओं में भी सम्पन्न थे। लेखक, कवि, नाटककार, संगीतकार, समाजसेवी, कलाकार आदि उनके कई रूप थे। उनके देश-विदेश की यात्राएं तो जगजाहिर हैं फलतः भारतीय कलाकृतियों के साथ ही विदेशी कृतियों से भी साक्षात्कार होता रहता था। उम्र के जिस पड़ाव पर लोग सेवानिवृत्त होते हैं उसके भी कुछ वर्ष बाद गुरुदेव का कला में प्रवेश करना उस उम्र में भी उनके युवा मन को दर्शाता है। उनका रहन-सहन, भेष-भूषा एक दम भव्य था और भव्य था उनका विचार।

कला में उनका प्रवेश इतना जबरदस्त रहा, इतना मौलिक रहा, इतना भावयुक्त रहा, बंधनों से इतना परे रहा कि खनक विदेश तक पहुँच गई हालाँकि शुरू में भारतीय खेमा इनके कृतियों को आधुनिक मानने में संदेह करता रहा, कृतियाँ हैं भी या नहीं इस पर भी संदेह रहा, रवीन्द्र नाथ कलाकार हैं भी या नहीं इस पर भी खूब मतभेद रहा, युद्ध स्तर पर पक्ष-विपक्ष में द्वंद्व रहा। राजा रवि वर्मा, अवनींद्रनाथ, अमृता शेरगिल सहित और भी कुछ कलाकारों के साथ तुलना तत्कालीन कला जगत हेतु ठीक नहीं था जबकि रवीन्द्र नाथ तो इन सब से अलग एक विशेष पथ पर चल रहे थे जहाँ खूबसूरती से इतर बदसूरती में भी भाव को महत्व दिया जा रहा था।

जल्दी ही सब कुछ बदल गया और टैगोर के कृतियों की चर्चा जोर-शोर से देश एवं विदेशों में होनी लगी।

जबकि कलाकार किसी ग्रंथ या कथानक पर सृजन कर रहे थे, गुरुदेव चित्रों के व्याख्या के पक्ष में नहीं थे बल्कि चाहते थे कि दर्शक कृतियों के साथ अपनी यात्रा खुद करें और पहुँचे जहाँ तक उनकी क्षमता है या कृति की क्षमता है अपने पास तक दर्शकों को ला पाने की। मई 1930 में उनकी पहली प्रर्दशनी पेरिस में हुई उसके तुरंत बाद से ही मात्र एक वर्ष में पश्चिम के कई प्रमुख शहरों में उनके चित्र प्रदर्शित हुए।

कला अकादमिक बंधनों से परे की वस्तु है। तमाम ऐसी बातें जो व्यावहारिक रूप से थोपी जाती रही हैं से कला में बाधा ही होगी। टैगोर की कला भी बंधनों से परे खुद का मौलिक सृजन है या हो सकता है कि विचारों का जो सागर उनके मन में था, जिसकी पूर्णतः अभिव्यक्ति साहित्य में संभव न हो पा रहा हो और उन्हें व्यक्त करने हेतु कला का सहारा लेना पड़ा हो, खैर पूरी अभिव्यक्ति तो यहाँ भी संभव नहीं फिर भी उनकी कृतियाँ उस समय ही अपने आप को सबसे अलग खड़ी कर पाने में सक्षम हो गई थीं। माध्यम, विचार, टेक्स्चर, धरातल आदि कहीं भी सीमा में बंधकर उन्होंने काम नहीं किया। मां-शिशु कृति में आकृति स्पष्टता भले न हो पर भाव स्पष्टता पूर्णतः दर्शित है। स्याही से कागज पर बने इस कृति में बच्चे को गोंद में लिए माँ का व्यावहारिक रूप भले ही न दिखा हो पर माँ और बच्चे के बीच का निश्चल प्रेम छलक उठा है। रंग, शैली सब भिन्न है। लम्बें मुंह और नाक वाली कृतियाँ एक बारगी भले भद्दी दिखाई देती हों लेकिन जब देर तक कृति को निहारते हैं, कृति दर्शन हेतु अनंत के यात्रा पर निकलते हैं, मानवीय, मनगढ़ंत पैमानों से बाहर निकलते हैं तो पाते हैं कि रवींद्रनाथ टैगोर साहित्य से ज्यादा यहाँ पर दर्शन की बात करते हैं। कभी भी चटख रंगों का प्रयोग न करना उनके गंभीर विषयों को गंभीरता से दर्शाना दिखाता है।

चॉक या कोयला के साथ दीवार पर जैसे कोई बच्चा खेलता हो और अनजाने ही सही भावयुक्त रेखाएं बन जाती हों जिसमें देर तक ध्यान लगाकर देखने पर एक अजीब सी यात्रा का दर्शन होता हो कुछ ऐसी ही कभी-कभी नजर आने लगती है गुरुदेव की कृतियाँ, पर स्वच्छंद हो घने रंगों के साथ विशेषतः डुडलिंग वाले स्टाइल में उनके कृतियों की एक अलग दुनिया है। यहीं से और कलाकारों हेतु द्वार भी खुलता दिखाई देने लगता है और बाद में तो आधुनिकता के नाम पर एक से बढ़कर एक कृतियों की बाढ़ सी आ गई है। कलाकृतियाँ अतिआधुनिकता के चपेट में आती गई हैं। एक से बढ़कर एक शैली का विकास समय के साथ ही भारतीय कला को और समृद्धि की तरफ ले गई है पर किसी-किसी क्षेत्र में गिरावट भी देखी जा सकती है।

1861 में जन्में गुरुदेव के कृतियों में बाह्य सौंदर्य की भले कमी हो पर कृति से संवाद में दर्शक अनायास ही विचारों, भावों, सौंदर्य आदि के आगोश में समा जाता है। प्रकृति, पक्षी, मानव सभी आकृतियों पर विचित्रता के आरोप भी लगे पर कला में क्रांति हेतु ये भी एक जरुरी कार्य था जो उनके द्वारा शुरू हुआ। टैगोर जी कृतियों को शीर्षकहीन रखने के पक्षधर रहे हैं ताकि दर्शक पगदंडी के सहारे यात्रा ना कर खुद ही स्वतंत्र मार्ग पर, स्वतंत्र भाव के साथ स्वच्छंद रूप से विचरण कर सके और आत्मसात कर सके कृतियों को। चित्र साभार गूगल से।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।

दर्शकों को निराश करती प्राइम वीडियो की फिल्म

एक बार नहीं कई बार ऐसा हुआ है कि ,एक दो नहीं कई प्रमुख वीडियो कम्पनीज़ ने दर्शकों को लगातार प्रदर्शित फिल्मों के स्तर को लेकर दर्शकों को निराश किया है । हाल ही में प्रदर्शित प्राइम वीडियो की फिल्म -' सुबेदार' , इसका ताज़ा उदाहरण है । 'दलदल' और फिर 'द ब्लफ' के बाद एक बार फिर प्राइम वीडियो ने अपने दर्शकों को ' सुबेदार ' फिल्म से निराश किया है। अनिल कपूर की यह फिल्म पूरी तरह से अनिल कपूर के कंधों पर ही टिकी हुई है। चरित्र चित्रण भी लगता है सिर्फ सिर्फ उनको ही फोकस कर लिखा गया है।

फिल्म में बाकी सभी चरित्र भर्ती के , संख्यात्मक हैं। खलनायक का लुक बेहद खूँखार है पर उनकी एक्टिंग से उनके खूँखारपन की पुष्टि नहीं होती है ।

ढेर सारे चरित्र गढ़े गये हैं मगर वे सभी बेवजह और असंगत लगते हैं और कुल मिलाकर फिल्म की लम्बाई को बढ़ाते ही हैं। बेतरतीब चरित्रों की इस फिल्म में भीड़ है। यद्यपि कास्टिंग अच्छी है पर निर्देशक के सामने यह बात सुस्पष्ट नज़र नहीं आती है कि वो दिखाना क्या चाहते हैं ?

ढाई घण्टे लम्बी इस फिल्म की कहानी एक सूबेदार अर्जुन मौर्य (अनिल कपूर) की तथाकथा है। अर्जुन अपनी बेटी श्यामा (राधिका मदान) के साथ रहते हैं और उनकी पत्नी (खुशबू सुन्दर) की एक दुर्घटना में मौत हो चुकी है। बेटी को पिता से शिकायत है कि पिता उस वक्त घर पर नहीं थे जब उसकी माँ का निधन हुआ।जिस शहर में अर्जुन रहता है वहाँ लेडी डॉन बबली दीदी (मोना सिंह) का राज है। बबली के पास कई घाट हैं जिनपर वो रेत खनन करती है। कोई भी उसके अवैध काम के बारे में बोलता है तो उसे मार दिया जाता है। बबली खुद जेल में बन्द हैं पर उनके छोटे भाई प्रिंस (आदित्य रावल) बाहर बबली के अपराध साम्राज्य को सम्भाल रहे हैं । प्रिंस और बबली का काम साफ्टी भैया संभालते हैं। अपने आधा जीवन सरहद पर बिता चुके अर्जुन जब रिटायर होकर घर लौटते हैं तो उनके दोस्त प्रभाकर (सौरभ शुक्ला) उनकी नौकरी प्रिंस के ड्राइवर के तौर पर लगा देते हैं। इसके बाद शुरू होता है असली खेल। अर्जुन को चुपचाप जीवन बिताने के लिए भी कभी भ्रष्टाचार तो कभी बबली और प्रिंस के गुण्डों से लड़ना पड़ता है। एक रिटायर्ड सूबेदार इनसे लड़ते हुए अपने सम्मान और अपनी बेटी की रक्षा कैसे करता है, इसी धुरी पर घूमती है सुबेदार फिल्म की कहानी।

बुन्देलखण्ड की पृष्ठभूमि पर आधारित इस कहानी में बस एक गाना- ' लल्ला को मना करी थी ' , ही दमदार है। बाकी फिल्म में गलती से ही किसी ने एक पूरा बुन्देलखण्डी संवाद बोला होगा। का, काए और तुमाए को हिन्दी में जोड़ देना बुन्देलखण्डी नहीं कहलाती। और सबसे दुखद यह है कि बड़े से बड़े कलाकारों का भी निर्देशक ने कोई फायदा नहीं उठाया। इस फिल्म का सबसे कमज़ोर पक्ष इसका लेखन है । इसे देखते वक्त कई बार आपको यह महसूस होगा कि ये वेबसिरीज के तौर पर तैयार की गई होगी और शायद बाद में फिल्म की तरह रिलीज की गई है। क्लाइमैक्स भी बकवास है और अगले पार्ट के लिए जो हिंट दी है वो तो पता नहीं कैसे झेली जाएगी।पूरी फिल्म में अगर कुछ अच्छा है तो वो हैं अनिल कपूर और सौरभ शुक्ला का अभिनय । अनिल को इस उम्र में भी इतनी शिद्दत के साथ अभिनय और एक्शन करते देखना वाकई मजेदार अनुभव है उनके एक्शन सीन गढ़े भी बड़े अच्छे से किए गए हैं क्योंकि यही फिल्म की ज़बान है । बावजूद इसके कि सौरभ शुक्ला का रोल छोटा है पर उन्होंने फिल्म को आत्मा दी है। ठेठ बुन्देलखण्डी अच्छी उन्होंने ही बोली है और वो अपनी भूमिका में पूरे जमे हैं ,बच्चों यह है कि उन्हें और स्क्रीन टाइम मिलना चाहिए था।

पटकथा के बाद फिल्म की दूसरी कमजोर कडी इसका निर्देशन है। पता नहीं उन्होंने क्या सोचकर आज के दौर में इतनी स्लो फिल्म बनाई है। फिल्म लमृबी भी बहुत ज्यादा है। संगीत में भी कुछ खास नहीं है। इतने बड़े माफिया और उसकी फौज का सामना एक अकेला सूबेदार कर लेता है और पूरी फिल्म में एक भी ऐसा सीन नहीं है जहाँ आपको खौफ महसूस हो। इतना वक्त लेकर भी ऐसा माहौल न बना पाना इस फिल्म की सबसे बडी कमजोरी है।

दृष्टिकोण

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

चाय जिंदगी और जीने का नाम है

चाय के साथ मन को लेकर सुकून की दुनिया खोजने का यह अर्थ भी नहीं है कि बहुत ज्यादा चाय उड़ेल लें या गट गट कर चाय गटक लें। चाय गटक जाने वाले रत्ती भर भी चाय नहीं पीते न ही चाय का स्वाद ले पाते उनके लिए चाय बस पेट पूजा भर ही रह जाती है। यहां चाय को जाना ही नहीं गया फिर ये भी बात सही है कि जब चाय को नहीं जाना जायेगा तो चाय पीने का अर्थ ही क्या। वैसे भी दुनिया में अर्थ के लिए बहुत कम लोग होते हैं और जो थोड़े बहुत कम लोग चाय पीते हैं और चाय को मन से आनंद के साथ लेते हैं वे ही जिंदगी को जीते हैं। इस दुनिया में सुकून भरी नींद और एक कड़क चाय के साथ दिन की शुरुआत हो जाएं तो आधे से ज्यादा काम तो यूं ही हो जाते हैं।

एजिंदगी को जानने समझने में चाय की अपनी ही दुनिया है। चाय पर हम सब दुनिया को ही लेकर चलते हैं। कोई कह सकता है कि दुनिया इतनी बड़ी है वह भला कैसे चाय पर लेकर जाई जा सकती। यदि दुनिया को भार समझने की गलती करते हैं तो ऐसा लग सकता है पर दुनिया भार नहीं है। दुनिया हमारे होने की उपस्थिति है, और जब जहां होते हैं वहीं दुनिया हो जाती है जब इस तरह से सोचते हैं तो हम चाय पर ही दुनिया को लेकर चलने लगते हैं।?यह भी कह सकते हैं कि चाय के साथ ही हम दुनिया को जी रहे होते हैं, दुनिया को जानने समझने के लिए चाय एक जरूरी जरिया हो जाती है। चाय के साथ मन को लेकर सुकून की दुनिया खोजने का यह अर्थ भी नहीं है कि बहुत ज्यादा चाय उड़ेल लें या गट गट कर चाय गटक लें। चाय गटक जाने वाले रत्ती भर भी चाय नहीं पीते न ही चाय का स्वाद ले पाते उनके लिए चाय बस पेट पूजा भर ही रह जाती है। यहां चाय को जाना ही नहीं गया फिर ये भी बात सही है कि जब चाय को नहीं जाना जायेगा तो चाय पीने का अर्थ ही क्या। वैसे भी दुनिया में अर्थ के लिए बहुत कम लोग होते हैं और जो थोड़े बहुत कम लोग चाय पीते हैं और चाय को मन से आनंद के साथ लेते हैं वे ही जिंदगी को जीते हैं। इस दुनिया में सुकून भरी नींद और एक कड़क चाय के साथ दिन की शुरुआत हो जाएं तो आधे से ज्यादा काम तो यूं ही हो जाते हैं।

लिखुंगा कि चाय बस पेय भर नहीं है, पेय पदार्थ से बहुत चाय के साथ जानने की बात महत्वपूर्ण है। जानना और अपनी समझ में वृद्धि करना, ज्ञानकोश की ओर बढ़ना तभी संभव हो पाता है जब आदमी चाय के साथ गप्पेबाजी के साथ अपनी दुनिया में जाता है। चाय, बातचीत और खुलकर गपशप जीने का एक अलग ही अंदाज बनाते हैं। चाय पर ही आकर दुनिया की सारी गति टिक जाती है। चाय के साथ ही लोग-बाग अपने काम पर आ जाते हैं। काम करते हुए जब थक जाते हैं तो चाय हमारे संसार को गतिमान बनाने का काम करती है। बहुत सारे लोगों को इस बात से शिकायत हो सकती है कि क्या चाय के अलावा कुछ और नहीं है जो आप चाय पुराण लेकर बैठ जाते हो। दुनिया में और भी बहुत कुछ है फिर चाय ही क्यों पी जाएं । चाय पीने में ऐसा क्या है जो और कहीं नहीं है? चाय की इस विस्तारित दुनिया के पीछे राज क्या है? इन प्रश्नों का उत्तर बस एक वाक्य में यहीं है कि चाय सहज है और चाय सबकी पहुंच में है। चाय के साथ हम सामाजिकता को निभाते हैं, जिंदगी केवल काटने के लिए नहीं मिली है बल्कि जीने के लिए मिली है और इस जिंदगी को अच्छे से हंसते बोलते जीने का सुख ही अलग है। चाय पर हम सब जिंदगी को जीते हैं ।

जिंदगी के ज़र्रे ज़र्रे को समझने के लिए जब सुकून के साथ बैठते हैं तो एक बात से तीन बातें और तीन बातों से अनंत बातों का सिलसिला सब चाय पर ही चल सकता है। चाय एक तरह से पूरी दुनिया हो जाती है। यहां जो बातें उठती हैं वह बहुत दूर तक यात्रा करती हैं। एक बात यहां से उठी और कहा तक जायेगी इसे कोई नहीं जानता। बहुत बार जहां से बात उठी होती है वहीं पहुंच जाती है और आदमी सोचता रहता है कि अरे मैं कहां से कहां आ गया और बातें हैं कि अपनी दुनिया ही बना लेती हैं। हम बस सोचते ही रह जाते हैं और बातें हैं कि पूरी दुनिया ही घूम आती हैं । कोई पकड़े या न पकड़े बातें चलती ही रहती हैं। बातों को पंख लग जाते हैं और यह पंख चाय की टेबल पर होता है। कहते हैं कि कोई भी केवल चाय भर नहीं पीता और न ही कोई अकेले चाय पीता हैं। जब भी आप चाय पर होते हैं तो साथ में पूरी दुनिया होती है जिसे आपने जीया है। चाय जिंदगी और जीने का नाम है। यहां हर कोई जीने का दावा करता है और और न जाने क्या क्या दावा करते लोग देखें जाते हैं पर यह सच है कि ज़िंदगी में चाय की उपस्थिति ज़िंदगी को वह सब कुछ दे देती है जिससे हमारे मन को राहत मिलती है। चाय के साथ आदमी अक्सर अपनी दुनिया में घूम आता है, अपनी दुनिया यानी मूल दुनिया जिससे उसका अस्तित्व है, जिससे उसका वजूद है। चाय पर हम सब जिंदगी को लिए लिए चलते हैं। चाय के साथ आदमी के जीने का अंदाज ही अलग हो जाता है और चाय पर एक तरह से सब बैठ जाते हैं। चाय के साथ ही आदमी अपने संसार को संबोधित करता है और संसार से संवाद के लिए चाय पर ही आता है। चाय की उपस्थिति दुनिया में एक दूसरे को समझते हुए जोड़ने की होती है। चाय पर बहुत बार दुश्मन भी बैठ जाते हैं और यह देखने में आता रहा है कि एक बार यदि दो दुश्मन भी चाय पर बैठ गए, मिल बैठकर बात कर लिए तो दुश्मनी तो दूर होती है उपहार में मित्रता गहरी हो जाती है। जो बातें नहीं करते थे वे बतियाते दिखते हैं। यदि किसी के घर जाएं और घर के सदस्य चाय पर बैठ पाने का भी समय निकाल न सके तो समझ लें कि घर में घर जैसा वातावरण नहीं है। यहां सब आपस में लड़ झगड़ रहे हैं कोई किसी को भी ठीक से न तो जानता है न ही समझता है। यहां घर नहीं है जो कुछ है वह बस घर जैसी आकृति है और आप तो जानते ही हैं कि आकृतियों से दुनिया नहीं चलती फिर घर कैसे चलेगा...?

वैश्य महासम्मेलन म.प्र धार द्वारा वैश्य दिवस गुड़ी पड़वा पर निकली भव्य शोभायात्रा

धार। वैश्य समाज द्वारा परंपरा अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, हिंदू नववर्ष, गुड़ी पड़वा, विक्रम संवत् 2083 वैश्य दिवस के पावन अवसर पर माता लक्ष्मीजी की भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। वैश्य महासम्मेलन मध्यप्रदेश धार द्वारा आयोजित भव्य

शोभायात्रा में समग्र जैन समाज, अग्रवाल समाज, माहेश्वरी समाज, विजयवर्गीय समाज, श्री गौड़ महाजन समाज, खंडेलवाल समाज, नीमा समाज, लाड़ समाज, दशोरा महाजन समाज, श्री मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज, सोनी स्वर्णकार समाज, जायसवाल समाज एवं समस्त वैश्य समाज धार के सैकड़ो पुरुष, महिला एवं युवा शामिल हुए।

प्रतिवर्ष अनुसार गुड़ी पड़वा पर निकलने वाली यह शोभायात्रा धानमंडी चौक से प्रारंभ होकर सेनापतिमार्ग,बनियावाडी,एम.जी. रोड,आनंद चौपाटी,जवाहर मार्ग,धानमंडी चौक पर समापन हुआ।शोभायात्रा में जगह जगह समाजजनों द्वारा मंच लगाकर महालक्ष्मी जी का पूजन एवं भव्य स्वागत किया गया।

प्रारंभ में सुसज्जित रथ पर रखें माँ लक्ष्मी जी, माँ सरस्वती जी माँ दुर्गा जी के चित्र की आरती वैश्य महासम्मेलन मध्यप्रदेश के प्रदेश महामंत्री और धार संभाग प्रभारी निर्मल अग्रवाल,प्रदेश उपाध्यक्ष अनंत अग्रवाल,प्रदेश महामंत्री महेश माहेश्वरी, वैश्य समाज के वरिष्ठ बबनलाल अग्रवाल, नरेश गंगवाल, वर्धमान सुराणा और जिला अध्यक्ष आशीष गोयल ने उतारी।

शोभायात्रा के कार्यक्रम संयोजक प्रवीण गुप्ता, कैलाश लाड, अभिषेक भंडारी,श्याम खंडेलवाल, राजीव नीमा, अजय लुहाड़िया, सतीशचंद्र अग्रवाल, की टीम ने शोभायात्रा की व्यवस्था संभाली,साथ ही डीपी ज्वेलर्स द्वारा प्रायोजित लकी ड्रा का भी संयोजन किया। हजारों की राशि के शानदार लक्की ड्रा में मुकेश गुप्ता को केल्विनेटर कंपनी का ओटीजी,संजय लुहाड़िया को एयर कुलर 100 ली वाटर कैपेसिटी का,दीपाली जैन को प्रेस्टिज कंपनी का एयर फ्रायर,इन्दिरा लुहाड़िया को वी आई पी कंपनी का लगेज सेट 2 पीस,गायत्री अग्रवाल को क्राउन कंपनी का 24' स्मार्ट टीवी उपहार में मिला।

शोभायात्रा में जिलाध्यक्ष आशीष गोयल,महिला जिला अध्यक्ष रेखा मेहता,युवा जिला अध्यक्ष अभिषेक भंडारी, घटक समाजों के अध्यक्ष, डॉ अनिल गंगवाल,वीरेन्द जैन, प्रेम सुगंधी,स्वयंप्रकाश सोनी,शैलेश नीमा, गोपाल गुप्ता, राधेश्याम विजय वर्गीय,गोपाल राठी,मुरली अग्रवाल, गगन सोनी, जगदीश गुप्ता,जीतेन्द जैन,विनय जैन, विजय मेहता,मनीष जायसवाल,हर्षा रुनवाल,सरोज सोनी,रतनमाला सुगंधी,वैजयंती माला नाहर, तृप्ति जायसवाल, अर्चना खंडेलवाल, पायल गोयल, अर्चना अग्रवाल आदि सैकड़ो पुरुष,महिला,युवा उपस्थित थे। जानकारी वैश्य महासम्मेलन मध्यप्रदेश धार के मीडिया प्रभारी श्याम मंगल लेबड़ ने दी।

ईद उल फितर पर्व हर्षोल्लास से मनाया, ईदगाह पर हुई नमाज,देश में अमन-चैन की मांगी दुआ, मिले गले

सोहागपुर। ईद उल फितर का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर ईदगाह परिसर में ईद की नमाज जामा मस्जिद के पेश इमाम अब्दुल जब्बार कासमी साहब ने अदा कराई। इस मौके पर प्रशासनिक अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि ने ईद की मुबारकबाद दी। वहीं वक्फ कायमखानी मस्जिद में ईद की नमाज हाफिज मोहम्मद मरगूब रज़ा कादरी साहब ने नमाज पढ़ाई। नमाज के बाद देश में अमन-चैन, खुशहाली के लिए विशेष दुआ की गई।

इसके के उपरांत नागरिकों ने एक-दूसरे को गले लगाकर ईद की मुबारकबाद दी। इसके बाद काफी नागरिकों ने कब्रिस्तान पहुंचकर अपने पूर्वजों को याद कर उनकी मगफिरत के लिए दुआ की। ईद के अवसर पर बच्चों में खासा उत्साह देखने को मिला। ईदगाह परिसर में अनुविभागीय अधिकारी पुलिस संजू चौहान, तहसीलदार रामकिशोर झरबड़े, थाना प्रभारी उषा मरावी, जनप्रतिनिधि एवं पक्ष ,विपक्ष के नेता एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे ।सभी ने एक दूसरे को ईद की बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

बच्चों में ईद खुशी

सोहागपुर। ईद उल फितर का पर्व सोहागपुर, ग्राम शोभापुर एवं ग्राम सेमरी हरचंद में मनाए जाने के समाचार हैं। इसके पूर्व सजातीय बन्धुओं एवं महिलाओं ने ईद खुशी मौके पर जमकर कपड़ों की खरीदारी की थी। ऐसे खुशहाल मौके पर फिर बच्चे भी कहा पीछे रहते। उन्होंने भी एक दूसरे से गले मिलकर ईद की खुशी मनाई।

521 मीटर लंबी विशाल चुनरी यात्रा 24 मार्च को

भोपाल। जय मॉ भवानी सेवा समिति द्वारा 24 मार्च 2026 को विशाल चुनरी यात्रा निकाली जा रही है यह चुनरी यात्रा न्यायमूर्ति दुर्गा उत्सव समिति, श्याम नगर से चूना भट्टी स्थित मॉ कालिका मंदिर चूना भट्टी भोपाल तक आयोजित की जायेगी। जहॉ समिति के पदाधिकारी मॉ काली को चुनरी भेंट कर पूजा- अर्चना आरती कर प्रदेश की खुशहाली की कामना करेंगे। समिति के प्रवक्ता राजेश राय ने बताया कि आज दिनांक 24 मार्च 2026 दिन मंगलवार को श्याम नगर स्थित न्याय मूर्ति दुर्गा उत्सव समिति चौराहा पर विधि विधान से पूजा अर्चना कर ढोल नगाडे, डीजे, रथ, बग्गी के साथ चुनरी यात्रा रवाना होगी। आयोजन में मुख्य अतिथी डॉ. अनुपम चौकसे, डॉ. एलएन मालवीया, दांडे सर, कौशल राय, विनोद चौहान, सुरेन्द्र सिंह तोमर, राजू संगोलिया, पंडित संदीप दुबे, शाशिकला चंदोले, संतोष शाक्या, राजू भिंडवाल, मनोज महावर, आशीष छ्गे, मनीष डांगे, जगदीश उईके, जितेन्द्र बंदे सहित बडी संख्या में क्षेत्रीय रहवासी एवं मतारानी के भक्तगण शामिल रहेंगे। यात्रा श्याम नगर से यात्रा आरंभ होकर, इंदिरा मार्केट, रविशंकर नगर कालोनी, ऋषिनगर, मणिपुरम, ब्रह्मकुमारी आश्रम, दुर्गा नगर, कोलार कालोनी होते हुए मॉ कलिका मंदिर , चुनाभट्टी पर यात्रा समापन होगी।

शादी के मौके पर हर्ष फायर, बंदूक जप्त

सोहागपुर। समीपवर्ती ग्राम सेमरीहरचंद में विगत दिवस शादी के मौके पर हर्ष फायरिंग करने वाले आरोपी पर पुलिस ने मामला दर्ज किया था। आज पुलिस ने हवाई फायर करने वाले आरोपी अभयपुरी गोस्वामी एवं शस्त्र लाइसेंस धारक प्रशांत पटेल से 12 बोर बंदूक एवं लाइसेंस जप्त किया गया है। पुलिस ने बताया कि शस्त्र लाइसेंस की शर्तों का उल्लंघन करने पर लाइसेंस धारक प्रशांत कुमार पिता भैरोंसिंह पटेल उम्र 41 साल निवासी ग्राम गोल हाल निवासी सेमरी हरचंद के विरुद्ध धारा 30 आर्म्स अधिनियम का इजाफा किया गया। अग्रिम कार्रवाई में शस्त्र लाइसेंस के निरस्त कराने की होगी।वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन पर एसडीओ पुलिस संजू चौहान नगर निरीक्षक उषा मरावी के मार्गदर्शन में सेमरी हरचंद चौकी प्रभारी उप निरीक्षक आकाशदीप पचाया के द्वारा की जा रही है। नगर निरीक्षक उषा मरावी एवं एएसआई गणेश राय ने सोहागपुर थाना क्षेत्र के समस्त शस्त्र लाइसेंसधारीयों को निर्देशित किया है ।कि शस्त्र लाइसेंस की शर्तों का पालन करें । अन्यथा पुलिस विधि अनुसार कार्रवाई की करेंगी। हर्ष फायरिंग से कभी कभी इस खुशी के मौके पर हादसे भी हो जाते हैं।

समाजसेवी एवं व्यवसायी दिनेश खुराना का निधन

कैंसर की बीमारी के चलते निधन, अंतिम संस्कार आज रविवार को

बैतूल। पंजाबी सेवा समिति के सक्रिय सदस्य, बिल्डर और व्यवसायी बबलू खुराना के बड़े भाई दिनेश खुराना का बीमारी के चलते आज शनिवार 21 मार्च को शाम 6.30 बजे निधन हो गया। वे लंबे समय से बीमार थे।

स्वर्गीय देशराज खुराना के बड़े बेटे दिनेश खुराना को करीब दो माह पहले आंतों के कैंसर का पता चला। पाढर के कैंसर अस्पताल में वे भर्ती थे। डाक्टर के व्दारा दवाई का कोई असर न होने की सलाह पर उन्हें आज दोपहर बाद घर बैतूल लेकर आ गए थे, जहां उनका निधन हो गया। कोठीबाजार राम मंदिर किराना दुकान के व्यवसायी दिनेश खुराना अपने पीछे पत्नी सुनीता , बेटा रोहित और बेटी साक्षी को छोड़ गए। उनके छोटे भाई जीतेन्द्र, भूपेन्द्र (बबलू) शैलेन्द्र (बिट्टू) और दीपक खुराना शोकाकुल हैं। आज रविवार को गोकुलधाम स्थित निवास से अंतिम यात्रा निकलेगी। पंजाबी समाज के अलावा जिले भर के गणमान्य नागरिकों, व्यवसायियों ने दिनेश खुराना के निधन पर श्रध्दांजलि अर्पित की है।

देरी पर 10 प्रतिशत तक लगेगा ब्याज, 28 मार्च तक की मियाद

बैतूल जिले के 50 हजार किसानों पर 208 करोड़ का ऋण बकाया

एस द्विवेदी, बैतूल। जिले के किसान, फसली ऋण जमा करने की अंतिम तारीख 28 मार्च 2026 के नजदीक आने से दबाव में हैं। जिला सहकारी बैंक का किसानों पर करीब 208 करोड़ रूपये बकाया है। तय समय सीमा में भुगतान नहीं करने पर ये सभी किसान डिफाल्टर घोषित हो जाएंगे, और उन्हें शून्य प्रतिशत ब्याज के स्थान पर 7 प्रतिशत ब्याज देना होगा। ड्यू डेट के बाद किसानों को 10 प्रतिशत ब्याज और 2 प्रतिशत पेनाल्टी के साथ ऋण जमा करना पड़ेगा। कुल मिलाकर करीब 10 प्रतिशत तक अतिरिक्त भार उन्हें उठाना पड़ेगा। इस संबंध में जब हमने किसान प्रसून मंटू चौधरी, राजेंद्र वर्मा, मनीष पवार आदि से बात की, तो उनका कहना है कि इस समय वे गेहूं कटाई में व्यस्त हैं, फसल बेचने के बाद ही भुगतान संभव है। ऐसे में ऋण जमा करने की समय सीमा बढ़ाई जानी चाहिए, क्योंकि अचानक बदले मौसम और बारिश के कारण उनकी फसले प्रभावित हुई है। क्षेत्र के कईयों किसानों की फसले बारिश से प्रभावित हुई है। फसल गीली होने से कटाई नहीं हो पा रही है, वहीं जिन किसानों ने फसल काटकर रखी थी, उन किसानों को अब फसल सूखानी पड़ेगी, जिसके बाद ही दावन संभव है। यहां उल्लेखनीय है कि जिले के लगभग 50 हजार किसानों पर अभी खरीफ सीजन का लगभग 208 करोड़ रुपये बकाया है। यदि किसान 28 मार्च तक यह ऋण जमा नहीं करते है तो उन्हें जीरो प्रतिशत ब्याज योजना का लाभ नहीं मिलेगा।

किसानों को दो बार मिलता है कर्जा- सरकार द्वारा किसानों को रबी सीजन और खरीफ सीजन हेतु जीरो प्रतिशत ब्याज दर पर कर्ज मिलता है। खरीफ सीजन हेतु 1 अप्रैल से 30 सितंबर तक लिए गए कर्ज को मार्च माह तक जमा करने पर जीरो प्रतिशत ब्याज लगता है। रबी फसलों हेतु 1 अक्टूबर से 31 मार्च तक कर्ज मिलता है, जिसे 15 जून तक जमा करने पर कोई ब्याज नहीं लगता है। जिला सहकारी बैंक से मिली जानकारी के अनुसार जिले में खरीफ और रबी सीजन के लिए कुल 1 लाख 37 हजार किसानों ने 467 करोड़ का ऋण लिया था। जिसमें से खरीफ सीजन के लिए 81 हजार किसानों ने 363 करोड़ रूपये का ऋण लिया था, इसमें से फरवरी तक 31 हजार किसानों ने 155 करोड़ रूपये ऋण जमा कर दिया है, वहीं रबी फसल के लिए 56 हजार किसानों ने 103 करोड़ रुपए का ऋण लिया है।

1 लाख 91 हजार किसानों के बने है क्रेडिट कार्ड- जिले में वैसे तो किसानों की संख्या ढाई लाख से अधिक है, लेकिन इनमें से 1 लाख 91 हजार किसानों का ही क्रेडिट कार्ड बना है। हालांकि कम ही किसान क्रेडिट कार्ड पर ऋण प्राप्त करते है। खरीफ सीजन में मात्र 81 हजार किसानों ने ऋण लिया था, जबकि रबी सीजन में 56 हजार किसानों ने जिला सहकारी बैक से ऋण लिया है। यदि हम खरीफ सीजन की बात करे, तो किसानों से ऋण वसूली के लिए बैंक कर्मचारी गांव-गांव पहुंच रहे हैं। बड़े बकायादारों को नोटिस भी जारी किए गए हैं। सहकारी बैंक से मिली जानकारी के मुताबिक फरवरी तक 31 हजार किसानों ने ऋण भी जमा कर दिया है। शेष 50 हजार किसानों से ऋण वसूली का कार्य अभी जारी है।

363 करोड़ से में 155 करोड़ रूपये जमा- अल्पकालीन कृषि ऋण निर्धारित अवधि में जमा करने पर ही शून्य प्रतिशत ब्याज का लाभ मिलता है। तय समय सीमा के बाद भुगतान करने पर 7 प्रतिशत ब्याज देना होता है और 2 प्रतिशत पेनाल्टी भी देनी होती है। किसान 28 मार्च से पहले ऋण जमा कर शून्य ब्याज योजना का लाभ ले सकते हैं। बताया जा रहा है कि खरीफ सीजन के लिए 81 हजार किसानों ने 363 करोड़ रूपये का ऋण लिया था। इनमें से 31 हजार किसानों ने 155 करोड़ रूपये जमा कर दिया है यानि अल्पकालीन कृषि ऋण निर्धारित अवधि में जमा कर शून्य प्रतिशत ब्याज का लाभ लिया है। जबकि 28 मार्च के बाद ऋण जमा करने पर किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज का लाभ नहीं मिलेगा।

बारिश ने बिगाडा किसानों का गणित - क्षेत्र के किसानों के खेतों में फसले कटकर तैयार है। जिले के कुछ किसानों ने गेहूं की कटाई भी शुरू कर दी थी, लेकिन ऐन वक्त पर बारिश ने इन किसानों के गणित को बिगाड़ दिया है। 19-20 मार्च को जिले में हुई बारिश के कारण खेतों में खड़ी फसल की बालिया झड़ गई, वहीं काटकर रखी गई फसल भी बारिश की वजह से भीग गई है। जिससे फसले प्रभावित होने की संभावना है। किसानों का कहना है कि कटकर खलियान में रखी गेहूं की फसल पर बारिश का पानी लगने से दाना काला पडने़ या सडने़ जैसी स्थिति बन सकती है। जिससे उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ेगा। किसानों का कहना है कि एक तो मौसम साथ नहीं दे रहा है, वहीं दूसरी तरफ बैंक का ऋण चुकाने की चिंता भी है।

इनका कहना है -

खरीफ सीजन के बकायादार किसानों को आगामी 28 मार्च तक संपूर्ण बकाया राशि जमा करने पर किसी प्रकार का ब्याज नहीं देना होगा। 28 मार्च के बाद ऋण लेने की तारीख से 28 मार्च तक 7 प्रतिशत और ड्यू डेट के बाद 12 प्रतिशत ब्याज चुकाना पड़ेगा।

- परिधि अग्रवाल,
सीईओ, जिला सहकारी केंद्रीय बैंक, बैतूल

जिले में भावांतर भुगतान योजना के तहत सरसों खरीदी 23 मार्च से होगी प्रारंभ

बैतूल। जिले में भावांतर भुगतान योजना के तहत सरसों खरीदी 23 मार्च 2026 से शुरू होकर 30 मई 2026 तक जारी रहेगी। मंडी सचिव ने बताया कि म.प्र. शासन द्वारा भावांतर भुगतान योजना में सरसों का विक्रय करने के लिए कृषकों को निर्देश जारी किए है। योजना का लाभ लेने के लिए किसानों को अपनी उपज केवल मुख्य मंडी प्रांगण में ही बेचना होगा। उपमंडी प्रांगण में योजना का लाभ नहीं मिलेगा। किसान के पंजीयन के पते के अनुसार उसी जिले की किसी भी मंडी के मुख्य मंडी प्रांगण में ही विक्रय करना होगा। केवल नए सरसो पर ही भावांतर का लाभ मिलेगा और सरसो विक्रय की पात्रता 13.22 क्विंटल/हेक्टयर होगी।

उन्होंने बताया कि 1 मार्च 2026 से 22 मार्च 2026 तक कृषक द्वारा मंडी में सरसों का विक्रय किया गया है तो भावान्तर भुगतान के लिए उस कृषक की कुल पात्रता सीमा में से बेची की गई मात्रा घटाकर शेष मात्रा ही भावान्तर भुगतान के लिए पात्रता होगी। योजना में विक्रय की गई उपज की राशि व्यापारी द्वारा ऑनलाइन ही डाली जाएगी। किसान द्वारा नगद राशि प्राप्त करने पर योजना का लाभ नहीं मिलेगा।उन्होंने किसानों से अपील की है कि वे निर्धारित दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए योजना का अधिकतम लाभ उठाएं।

पीएम स्वनिधि योजना में बैतूल अव्वल

शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त कर प्रदेश में प्रथम स्थान

बैतूल। प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के प्रभावी क्रियान्वयन में बैतूल जिले ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करते हुए मध्यप्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। योजना प्रारंभ से लेकर वर्तमान तक शासन द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के विरुद्ध जिले ने शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त कर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। योजना में 1 जून 2020 से मार्च 2026 तक योजना अंतर्गत तीन चरणों में पथ विक्रेताओं को 15000, 25000, 50000 के ऋण के कुल 28092 के लक्ष्य के विरुद्ध 36966 ऋण प्रकरण बैंकों में प्रेषित किए गए जिसमें 32127 स्वीकृत और 31342 प्रकरण वितरीत किए गए जो कुल लक्ष्य का 111.57 प्रतिशत हैं।चालू वित्तीय वर्ष में भी जिले ने योजना के तीनों चरणों में 100 प्रतिशत लक्ष्य हासिल कर अपनी अग्रणी स्थिति बरकरार रखी है। कलेक्टर बैतूल नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी की सतत मॉनिटरिंग, समय-समय पर आयोजित विशेष समीक्षा बैठकों एवं डीएलडीसी की बैठकों के माध्यम से विभागीय अधिकारियों और बैंकर्स के समन्वित प्रयासों का परिणाम है। साथ ही जिले की सभी नगरीय निकायों की एनयूएलएम टीम तथा नगर पालिका के योजना से जुड़े कर्मचारियों की मेहनत और सक्रियता ने इस उपलब्धि को संभव बनाया है। प्रशासन द्वारा निरंतर मॉनिटरिंग और हितग्राहियों तक योजनाओं का प्रभावी लाभ पहुंचाने पर विशेष जोर दिया गया।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र कुमार मोदी की द्वारा कोविड-19 काल में पथ विक्रेताओं के आर्थिक एवं सामाजिक संकट को दूर करने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना प्रारंभ की गई थी। योजना के अंतर्गत पथ विक्रेताओं को ब्याज अनुदान के साथ चरणबद्ध रूप से ऋण उपलब्ध कराया जाता है। पूर्व में यह राशि 10,000, 20,000 एवं 50,000 रुपए थी, जिसे पीएम स्वनिधि 2.0 के तहत बढ़ाकर क्रमशः 15,000, 25,000 एवं 50,000 रुपए कर दिया गया है। तृतीय चरण के ऋण के बाद लाभार्थियों को 30,000 रुपए तक की लिमिट वाला क्रेडिट कार्ड भी प्रदान किया जा रहा है।इस योजना के माध्यम से जिले के पथ विक्रेताओं को आत्मनिर्भर बनाने एवं उनके व्यवसाय को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है।

पत्नी से अवैध संबंध के शक में सरेआम पड़ोसी ढाबा संचालक की हत्या, आरोपी महाराष्ट्र से गिरफ्तार

बड़वानी (नप्र)। अपनी पत्नी के अवैध संबंध के शक में एक व्यक्ति द्वारा दिनदहाड़े सरेआम अपने ही पड़ोसी ढाबा संचालक की की बेरहमी से हत्या करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। घटना वरला थाना क्षेत्र के बलवाड़ी कस्बे की है, जहां आरोपी ने बीच सड़क पर वारदात को अंजाम देकर क्षेत्र में दहशत फैला दी। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए फरार आरोपी को महाराष्ट्र से गिरफ्तार कर लिया है।

एसडीओपी सेंधवा अजय वाघमारे ने बताया कि आरोपी मनोज बिरारे ने 45 वर्षीय पड़ोसी और ढाबा संचालक निलेश भावसार की हत्या कर दी। आरोपी को अपनी पत्नी और मृतक के बीच अवैध संबंध होने का संदेह था, जिसके चलते दोनों के बीच पहले भी विवाद हो चुका था।

घटना गुरुवार दोपहर करीब 2:30 बजे की है। निलेश भावसार अपने ढाबे की ओर जा रहे थे, तभी आरोपी मोटरसाइकिल से वहां पहुंचा और जानबूझकर उन्हें टक्कर मार दी। टक्कर से गिरने के बाद आरोपी ने ईंट और पत्थरों से निलेश के सिर और चेहरे पर ताबड़तोड़ हमला कर दिया। इस दौरान आसपास मौजूद लोग घटना को देखते रह गए और आरोपी वारदात को अंजाम देकर मौके से फरार हो गया।

गो सम्मान आव्हान अभियान की बैठक आज

बैतूल। गो सम्मान आव्हान अभियान 27 अप्रैल के संबंध में संतों के सानिध्य में एक विशेष बैठक का आयोजन आज 22 मार्च रविवार को गायत्री मंदिर सिविल लाइन बैतूल में रखी गई है। बैठक में सभी पदाधिकारियों और सदस्यों सहित नागरिकों से उपस्थित होने का आग्रह किया है।

डॉक्टरों ने मृत बताया, कुछ देर बाद हिलने लगा नवजात

भोपाल के हमीदिया में फिर लापरवाही, परिजन का हंगामा, पुलिस बुलानी पड़ी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के हमीदिया अस्पताल में एक बार फिर नवजात को मृत घोषित करने के बाद उसमें हरकत दिखने का मामला सामने आया है, जिससे अस्पताल में विवाद की स्थिति बन गई। शुक्रवार को 6 माह की गर्भवती महिला की इमरजेंसी डिलीवरी के बाद बच्चे को मृत बताया गया, लेकिन कुछ देर बाद धड़कन जैसे संकेत मिलने पर परिजन आक्रोशित हो गए।

इससे पहले भी बुधवार को इसी तरह का मामला सामने आ चुका है, जिसमें मृत घोषित बच्ची में सांसें चलने का दावा किया गया था। हमीदिया अस्पताल में परिजनों का देर रात 12 बजे तक हंगामा होता रहा। वहीं डॉक्टरों का कहना है कि यह अत्यंत प्री-मेच्योर एबॉर्टस केस था, जिसमें ऐसी स्थिति संभव होती है।

इमरजेंसी डिलीवरी के बाद नवजात को मृत घोषित किया- जानकारी के अनुसार, शुक्रवार दोपहर करीब 4 बजे मानताशा नाम की महिला हमीदिया अस्पताल के ब्लॉक-2 में गंभीर हालत में पहुंची। महिला लगभग 6 महीने की गर्भवती थी। अस्पताल पहुंचने के समय ही शिशु का सिर बाहर आ चुका था। स्थिति को देखते हुए डॉक्टरों ने तुरंत लेबर रूम में भर्ती कर इमरजेंसी डिलीवरी कराई। इसके बाद परिजनों को बताया गया कि बच्चा मृत पैदा हुआ है, लेकिन कुछ समय बाद नवजात में हलचल जैसी स्थिति दिखने लगी, जिससे परिजनों में आक्रोश फैल गया और अस्पताल में हंगामा शुरू हो गया।डॉक्टरों के मुताबिक, नवजात प्री-मेच्योर था। उसे बचाना मुश्किल था।

हंगामे के बाद पुलिस को बुलाना पड़ा- परिजनों के हंगामे को देखते हुए अस्पताल प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाई और कोहेफिजा टीआई के.जी. शुक्ला को बुलाया गया। पुलिस ने पहुंचकर परिजनों को समझाने का प्रयास किया और स्थिति को नियंत्रित किया। अस्पताल प्रशासन ने तत्काल मामले को शांत कराने की कोशिश की, लेकिन घटना ने एक बार फिर अस्पताल की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

ममता कुलकर्णी

ग्लैमर से साध्वी, फिर वहां से वापसी

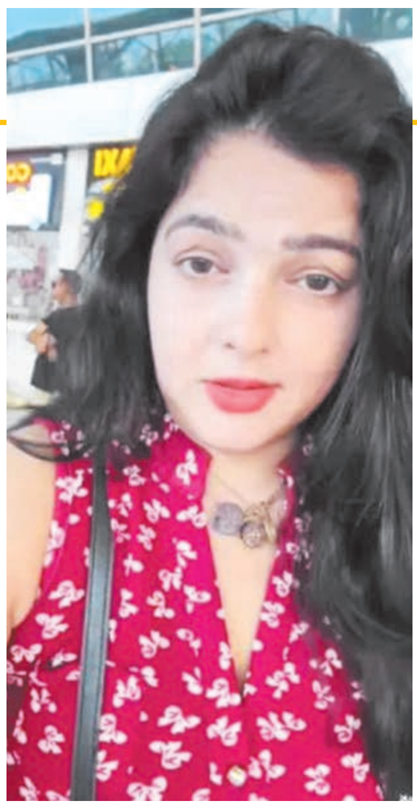

90 के दशक की चर्चित और बोल्ड छवि वाली अभिनेत्री ममता कुलकर्णी एक बार फिर सुर्खियों में हैं। लेकिन, इस बार किसी फिल्म या विवादित बयान की वजह से नहीं, बल्कि अपने तेजी से बदलते जीवन-रूप के कारण। 'महाकुंभ 2025' में संन्यास लेने और साध्वी बनने के ऐलान से सबको चौंकाने वाली ममता अब एक बार फिर ग्लैमरस अवतार में नजर आई। उनके इस बदलाव ने न केवल फैंस को हैरान किया है, बल्कि सोशल मीडिया पर बहस भी छेड़ दी है कि आखिर यह आध्यात्मिक यात्रा थी या इमेज का नया प्रयोग।

बसंत पाल

साल 2025 में महाकुंभ के दौरान ममता कुलकर्णी ने सार्वजनिक रूप से सांसारिक जीवन त्यागने की घोषणा की थी। यह वही ममता थीं जिन्हें कभी बॉलीवुड की सबसे ग्लैमरस अभिनेत्रियों में गिना जाता था। उनके इस फैसले ने मीडिया और धार्मिक जगत दोनों को चौंका दिया। उन्होंने भगवा वस्त्र धारण किए, आध्यात्मिक जीवन अपनाने की बात कही और किन्नर अखाड़े से जुड़कर महामंडलेश्वर बनाए जाने तक की खबरें सामने आईं। हालांकि, यह पद लंबे समय तक नहीं टिक सका और विरोध के चलते उन्हें इससे हटा दिया गया। इसके बाद भी कुछ समय तक वह साध्वी रूप में नजर आती रहीं, जिससे लगा कि वह सच में इस मार्ग पर आगे बढ़ चुकी हैं।

हाल ही में सामने आए उनके इंस्टाग्राम वीडियो ने पूरी कहानी को नया मोड़ दे दिया। गोवा ट्रिप के दौरान ममता पूरी तरह ग्लैमरस अंदाज में नजर आई रेड वन-पीस ड्रेस, खुले बाल, हल्का

मेकअप और आत्मविश्वास से भरा अंदाज। यह बदलाव इतना अचानक था कि लोगों ने सवाल उठाने शुरू कर दिए। क्या यह सिर्फ एक अस्थायी आध्यात्मिक दौर था? या फिर यह पब्लिसिटी का हिस्सा! दिलचस्प बात यह है कि ममता ने वीडियो में अपने लाइफस्टाइल का भी प्रदर्शन किया। खास तौर पर महंगे स्मार्ट सनग्लासेज, जो आजकल सेलिब्रिटी ट्रेंड का हिस्सा बनते जा रहे हैं। इससे यह भी संकेत मिलता है कि वह फिर से सार्वजनिक और ग्लैमरस जीवन में सक्रिय होना चाहती हैं।

ममता के इस बदले हुए रूप पर सोशल मीडिया दो हिस्सों में बंट गया। एक वर्ग उन्हें ट्रोल कर रहा है। लोग इसे ड्रामा या पब्लिसिटी स्टंट बता रहे हैं। कई यूजर्स सवाल उठा रहे हैं कि क्या आध्यात्मिकता सिर्फ एक फेज थी जिसे अब छोड़ दिया गया! दूसरा वर्ग उनके समर्थन में भी खड़ा है। कुछ लोग इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मामला मानते हैं। उनका कहना है कि हर इंसान को अपने जीवन में बदलाव करने का अधिकार है, चाहे वह आध्यात्मिक हो या ग्लैमरस। आज के डिजिटल दौर में, जहां इमेज और पर्सनल ब्रांडिंग बेहद अहम हो चुकी है, ममता का यह बदलाव एक बड़े ट्रेंड की ओर भी इशारा करता है, जहां सेलिब्रिटी अपनी पहचान को लगातार री-डिफाइन करते रहते हैं।

ममता कुलकर्णी ने हाल ही में एक लोकप्रिय कुकिंग रियलिटी शो में गेस्ट अपीयरेंस देकर टीवी पर वापसी की। यह उनकी लगभग 25 साल बाद स्क्रीन पर मौजूदगी थी। शो में उनका अंदाज संतुलित नजर आया। न तो पूरी तरह ग्लैमरस और न पूरी तरह साध्वी। उन्होंने साड़ी पहनी, बातचीत में सहजता दिखाई और पुराने दिनों की यादें ताजा कीं। इसके साथ ही कई सवाल उठते हैं कि क्या वह धीरे-धीरे एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री में वापसी कर रही हैं? क्या यह उनके नए पब्लिक इमेज का हिस्सा है, जहां आध्यात्मिकता और ग्लैमर का मिश्रण हो?

ममता कुलकर्णी का नाम 90 के दशक में कई हिट फिल्मों से जुड़ा रहा है। उनकी स्क्रीन प्रेजेंस और बोल्ड इमेज उन्हें अलग पहचान देती थी। अब जब वह फिर से सार्वजनिक रूप से एक्टिव हो रही हैं, तो यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या वह फिल्मों या ओटीटी प्लेटफॉर्म पर वापसी करेंगी। आज का एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री पहले से काफी बदल चुकी है। जहां उम्र और इमेज की सीमाएं पहले जैसी नहीं रहीं। कई पुराने सितारे ओटीटी के जरिए नई शुरुआत कर रहे हैं। ऐसे में ममता के लिए भी यह एक संभावित रास्ता हो सकता है।

ममता कुलकर्णी का यह पूरा सफर एक बड़े सवाल को जन्म देता है कि क्या आध्यात्मिकता आज भी निजी यात्रा है, या यह भी पब्लिक इमेज का हिस्सा बन चुकी है! सेलिब्रिटी संस्कृति में अक्सर देखा गया है कि स्टार्स अपने जीवन के अलग-अलग फेज को सार्वजनिक रूप से साझा करते हैं, चाहे वह फिटनेस हो, मानसिक स्वास्थ्य या आध्यात्मिकता। ममता का केस इसी ट्रेंड का एक एक्सट्रीम उदाहरण हो सकता है, जहां एक व्यक्ति कुछ ही महीनों में दो बिल्कुल अलग पहचान के साथ सामने आता है।

फिर भौकाल मचाने आ रहे 'कालीन भैया'

पंकज त्रिपाठी, दिव्येंदु शर्मा और अली फजल स्टारर क्राइम बेस्ड वेब सीरीज 'मिर्जापुर' ने एक लंबे समय तक दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। इस सीरीज के अब तक तीन सीजन आ चुके और चौथे सीजन का इंतजार हैं। चौथा सीजन कब तक आएगा, यह तो अभी तक साफ नहीं हुआ, लेकिन इस बीच मेकर्स ने 'मिर्जापुरः द मूवी' की रिलीज डेट से पर्दा उठा दिया। फरहान अख्तर के प्रोडक्शन में बनी यह फिल्म कब सिनेमाघरों में दस्तक देगी?

अमेजन प्राइम वीडियो ने हाल ही में मुंबई में एक इवेंट का आयोजन किया, जिसमें उन्होंने साल 2026 में रिलीज होने वाली अपनी 55 फिल्मों और सीरीज की लिस्ट जारी की। इस लिस्ट में 'मिर्जापुरः द मूवी' भी शामिल थी, जिसकी बीते एक साल से जबरदस्त चर्चा हो रही है। अमेजन ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक नया पोस्टर जारी करते हुए लिखा 'मिर्जापुरः द मूवी' अब बड़े पर्दे पर। आधिकारिक घोषणा के मुताबिक, 'मिर्जापुरः द मूवी' सिनेमाघरों में 4 सितंबर 2026 को रिलीज होगी।

फिल्म की कहानी क्या होगी, यह अभी तक आधिकारिक रूप से घोषित नहीं किया गया। लेकिन, सबसे बड़ी खबर यह है कि इस फिल्म में एक बार फिर से 'मुन्ना भैया' और 'कम्पाउंडर' की वापसी हो रही है, जो वेब सीरीज में मारे जा चुके थे। कहा जा रहा है कि मूवी में उन अनकही कहानियों और चीजों को भी दिखाया जाएगा, जो फैंस ने सीरीज में नहीं देखी हैं। इस बार मिर्जापुर फिल्म से कई पुराने सितारों के साथ-साथ कुछ नए कलाकार भी जुड़ रहे हैं। इसमें जितेंद्र कुमार, रवि किशन, मोहित मलिक और सोनल चौहान शामिल हैं।

रियल बॉक्स

सितारों के कर्ज और दिवालियापन के किस्से

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्मी दुनिया परदे पर जितनी चमकदार दिखती है, भीतर उतनी ही जोखिमों और उतार-चढ़ाव से भरी होती है। यहां स्टारडम रातों-रात आसमान छूता है, तो कभी एक फ्लॉप फिल्म या गलत निवेश कलाकारों को आर्थिक संकट में धकेलने से भी नहीं चूकता। कई नामी सितारे ऐसे रहे, जिन्होंने अपने करियर के चरम पर कर्ज, नुकसान और यहां तक कि दिवालियेपन की स्थिति देखी है। लेकिन, इन संघर्षों की खास बात यह है कि ज्यादातर कलाकारों ने हार नहीं मानी और मेहनत से वापसी कर अपनी पहचान फिर मजबूत की। पुराने दौर से लगाकर राजपाल यादव तक का उदाहरण सितारों के संघर्ष का असली चेहरा है। इस प्रसंग ने एक बार फिर यह सवाल उठाया कि आर्थिक संकट और फिल्म इंडस्ट्री का रिश्ता कितना पुराना है। फिल्म इतिहास के पन्नों पर उन सितारों की कहानियां दर्ज हैं, जिन्होंने गिरकर भी खुद को संभाला है।

ताजा घटना राजपाल यादव की है, जो अपनी नैसर्गिक कॉमेडी के लिए पहचाने जाते हैं। ऐसी कई फ़िल्में याद की जा सकती है, जिसमें इस अभिनेता ने कालजयी किरदार किए। लेकिन, फिल्म 'अता पता लापता' के निर्माण के लिए उन्होंने करीब 5 करोड़ रुपए का लोन लिया था। फिल्म 2012 में रिलीज हुई, पर बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं रही। इसके बाद उनपर आर्थिक दबाव बढ़ता गया और कर्ज बढ़कर लगभग 9 करोड़ रुपए तक पहुंच गया। लंबे समय तक कानूनी विवाद चलता रहा और अंततः उन्हें तिहाड़ जेल में सरेंडर करना पड़ा। यह घटना दिखाती है, कि फिल्म निर्माण का जोखिम कितना बड़ा हो सकता है। एक गलत प्रोजेक्ट सालों की मेहनत और कमाई पर भारी पड़ सकता है। यह पहली घटना नहीं है, जब कोई फिल्म अभिनेता ऐसी मुसीबत में फंसा हो।

आर्थिक संकट में फंसने और उबरने की सबसे चर्चित कहानी अमिताभ बच्चन की है। 90 के दशक में उनकी कंपनी 'अमिताभ बच्चन कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एबीसीएल) भारी घाटे में चली गई। उन पर करीब 90 करोड़ का कर्ज और दर्जनों कानूनी केस थे। उस दौर में उनकी फिल्में भी लगातार फ्लॉप हुई। ऐसे समय में यश चोपड़ा ने उन्हें फिल्म 'मोहब्बतें' में मौका दिया, जिसने उनकी दूसरी पारी की शुरुआत की। इसके बाद टीवी शो और नई फिल्मों ने उन्हें फिर सुपरस्टार बना दिया। धीरे-धीरे उनकी फ़िल्में हिट हुई और फिर 'कौन बनेगा करोड़पति' जैसे टीवी शो ने उन्हें सारे संकटों से उबार दिया। आज उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत मानी जाती है और यह उदाहरण बताता है कि सही मौके और मेहनत से संकट से निकला जा सकता है। हिंदी सिनेमा के सबसे बड़े शोमैन कहे जाने वाले राज कपूर को भी अपने दौर में भारी नुकसान झेलना पड़ा। उनकी महत्वाकांक्षी फिल्म 'मेरा नाम जोकर' बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप हुई और वे लगभग दिवालियेपन की कगार पर पहुंच गए। कहा तो यहां तक जाता है कि उनका बंगला तक गिरवी था। लेकिन, उन्होंने हार नहीं मानी धीरे-धीरे संभले। लेकिन, इस संकट से उन्हें बाहर निकाला बाद में बनाई एक फिल्म ने। कुछ साल बाद राज कपूर ने अपने बेटे ऋषि कपूर और डिंपल कापड़िया को लेकर प्रेम कहानी 'बॉबी' बनाई, जिसने न सिर्फ बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड कमाई की और उनके करियर को नई जिंदगी दी। यह कहानी एक फ़िल्मकार का जुझारूपन बताती है कि एक असफलता पूरी पहचान खत्म नहीं करती। कोशिश की जाए, असफलता को सफलता में बदला जा सकता है।

इसी तरह प्रतिभाशाली फिल्मकार गुरु दत्त ने भी कई महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट्स में भारी निवेश किया था। उनकी फिल्मों को बाद में क्लासिक माना गया, लेकिन रिलीज के समय अपेक्षित कमाई न होने से आर्थिक दबाव बना रहा। 50-60 के दशक के लोकप्रिय अभिनेता भारत भूषण भी आर्थिक संकट का शिकार हुए। शुरुआती सफलता के बाद उनकी फिल्में नहीं चलीं और गलत निवेश के कारण उन्हें अपना घर तक बेचना पड़ा। जीवन के अंतिम वर्षों में उन्हें आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जो बताता है कि फिल्मों में स्टारडम कभी स्थायी नहीं होता। फिल्म इंडस्ट्री में राजेश खन्ना से बड़ा कोई सितारा नहीं रहा। लगातार 16 हिट फ़िल्में देने वाले इस कलाकार के कुछ गलत फैसलों ने उन्हें असफलता की तरफ धकेल दिया। इसके बाद वे कभी उबर नहीं पाए। पुराने दौर की त्रासदियों में मीना कुमारी का नाम भी लिया जाता है। बेहतरीन अभिनय

के बावजूद निजी जिंदगी की समस्याओं और गलत आर्थिक फैसलों ने उन्हें कर्ज में डुबो दिया। उनके आखिरी वर्षों में आर्थिक स्थिति काफी कमजोर रही। उनकी कहानी फिल्मी दुनिया की भावनात्मक और आर्थिक असुरक्षा दोनों को उजागर करती है।

फिल्म कलाकारों की नई पीढ़ी में भी आर्थिक जोखिम के उदाहरण मिलते हैं। सुपरस्टार शाहरुख खान ने 'रा-वन' जैसी हाई-बजट फिल्म में भारी निवेश किया था। फिल्म ने औसत प्रदर्शन किया और शुरुआती दौर में आर्थिक दबाव बढ़ा, लेकिन बाद की फिल्मों और प्रोडक्शन हाउस की सफलता से उन्होंने स्थिति संभाल ली। उनकी 'पठान' और 'जवान' ने उन्हें फिर रेस में ला दिया। यह उदाहरण दिखाता है कि बड़े सितारे भी जोखिम लेते हैं और कभी-कभी नुकसान उठाते हैं। कभी स्टार रहे जैकी श्रॉफ ने भी लंबा आर्थिक संकट देखा। उन्होंने फिल्म 'बूम' में निवेश किया, जो बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह असफल रही। नुकसान इतना बड़ा था कि उन्हें अपना घर तक बेचना पड़ा। लेकिन उन्होंने काम जारी रखा, नए रोल स्वीकार किए और धीरे-धीरे अपनी स्थिति संभाली। आज वे फिल्म और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सक्रिय हैं। लंबे समय तक कॉमेडी के बादशाह रहे गोविंदा का करियर भी एक दौर में ठहर गया। कम और गलत फिल्में मिलने के बाद खराब आर्थिक फैसलों के कारण उन्हें परेशानी में डाल दिया। ऐसे में सलमान खान के साथ उनकी फिल्म 'पार्टनर' ने बॉक्स ऑफिस पर बड़ी सफलता हासिल की और गोविंदा को फिर से लोकप्रिय बना दिया। यह उदाहरण इंडस्ट्री में रिश्तों और सहयोग की अहमियत भी दिखाता है।

दक्षिण भारतीय सुपरस्टार कमल हासन ने अपनी महत्वाकांक्षी फिल्म 'विश्वरूपम' के लिए निजी संपत्ति तक गिरवी रख दी थी। फिल्म रिलीज से पहले विवादों और बैन के कारण उन्हें भारी आर्थिक नुकसान झेलना पड़ा। बाद में फिल्म रिलीज हुई और धीरे-धीरे स्थिति सुधरी। 2022 में 'विक्रम' की सफलता के बाद उन्होंने सार्वजनिक रूप से कहा कि अब वे अपने कर्ज से पूरी तरह उबर सकते हैं। डिस्को डांसर के नाम से मशहूर मिथुन चक्रवर्ती को भी आर्थिक मुश्किलों का सामना करना पड़ा। उन्हें होटल व्यवसाय में नुकसान हुआ और फिल्मी करियर भी धीमा पड़ गया था। फिर, टीवी शो, रियलिटी कार्यक्रमों और नई फिल्मों के जरिए उन्होंने नए सिरे से लोकप्रियता हासिल की और आर्थिक स्थिति मजबूत की। कलाकारों और फिल्मकारों की इन कहानियों से एक बात साफ होती है कि फिल्म इंडस्ट्री में आर्थिक जोखिम हमेशा मौजूद रहता है। कई कलाकार अपने सपनों के प्रोजेक्ट में खुद निवेश करते हैं, जिससे नुकसान की संभावना भी बढ़ जाती है।

इसके अलावा, गलत मैनेजमेंट, खराब सलाह, टैक्स समस्याएं और बदलते ट्रेंड भी आर्थिक संकट की वजह बनते हैं। पुराने दौर में कलाकारों के पास फाइनेंशियल प्लानिंग की जानकारी कम होती थी। जबकि, आज कई सितारे प्रोफेशनल टीम की मदद लेते हैं। हालांकि, इन संघर्षों की सबसे प्रेरक बात उनकी वापसी है। अमिताभ बच्चन से लेकर कमल हासन तक, कई कलाकारों ने दिखाया कि गिरावट अंत नहीं होती। मेहनत, नए अवसर और दर्शकों का समर्थन कलाकारों को फिर खड़ा कर सकता है। साथ ही यह कहानियां नए कलाकारों के लिए सीख भी हैं, सिर्फ सफलता नहीं, बल्कि वित्तीय समझ और सही फैसले भी जरूरी हैं। फिल्मी सितारों की ये कहानियां याद दिलाती हैं कि ग्लैमर के पीछे संघर्ष और जोखिम कम नहीं होते। राजपाल यादव का मामला हो या पुराने दौर के सितारों की त्रासदी, हर कहानी में एक सबक है कि असफलता जीवन का हिस्सा है, लेकिन हिम्मत और मेहनत से वापसी हमेशा संभव है। यही वजह है कि ये सितारे सिर्फ अपनी फिल्मों के लिए नहीं, बल्कि अपने संघर्ष और पुनरुत्थान के लिए भी याद किए जाते हैं।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

नए चेहरों को चांस देंगी आलिया भट्ट

बॉलीवुड में 'इनसाइडर वर्सेज आउटसाइडर' की बहस काफी समय से चल रही है। लेकिन, अब आलिया भट्ट ने इस मुद्दे पर बड़ा बयान देकर लोगों का दिल जीत लिया है. आलिया ने साफ कहा है कि वो अपने प्रोडक्शन हाउस के जरिए आउटसाइडर्स को मौका देना चाहती हैं। दरअसल, आलिया अपनी नई फिल्म 'डोंट बी शाई' के लॉन्च इवेंट में नजर आई थीं। ये इवेंट अमेजन के बड़े शोकेस के दौरान हुआ, जहां कई नए प्रोजेक्ट्स को लेकर ऐलान किया गया। इसी दौरान स्टेज पर आलिया और करण जौहर के बीच बातचीत शुरू हो गई और उस दौरान उन्होंने सबका ध्यान खींच लिया।

करण जौहर ने हल्के-फुल्के अंदाज में आलिया की तारीफ करते हुए कहा कि अब वो एक समझदार और एक्सपीरियंस्ड प्रोड्यूसर बन चुकी हैं। उन्होंने मजाक में कहा कि आलिया के जवाब अब उनके सवालों से काफी अलग होते हैं। इस पर आलिया ने भी तुरंत जवाब देते हुए कहा कि एक्टर्स को लॉन्च करने का भी एक तरीका होता है। बातचीत को आगे बढ़ाते हुए करण ने मजाक में कहा कि शायद उन्हें एक्टर्स लॉन्च करने के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। फिर उन्होंने अपनी ही फिल्म 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' का जिक्र करते हुए कहा कि उसी से उन्होंने आलिया को लॉन्च किया था। फिल्म 'डोंट बी शाई' एक 20 साल की लड़की श्यामिली 'शाई' दास की कहानी है। वो अपनी जिंदगी के फैसले खुद लेती है और उसे लगता है कि सब कुछ उसके कंट्रोल में है। लेकिन, अचानक उसकी लाइफ में ऐसे बदलाव आते हैं, जो उसे पूरी तरह हिला देते हैं।

अशोक जोशी

दो बड़ी फिल्मों से देश की दो नीतियां उजागर

इन दिनों दो फिल्मों की चर्चा जोरों पर हैं। इनमें से एक फिल्म प्रदर्शित हो चुकी है और दूसरी प्रदर्शन के लिए कमर कस चुकी हैं। ये दोनों फिल्में भारत के दो पक्षों का प्रतीक

मानी जा रही हैं। भारत सरकार के जो दो पक्ष हमारे सामने आए हैं, उनमें एक पक्ष थोड़ा आक्रामक है। इस पक्ष का मानना है कि यदि भारत के साथ कोई आतंकवादी हरकत होती है, तो वह मूक दर्शक बने रहने के बजाए तीव्र प्रतिक्रिया कर उसका आक्रामक तरीके से जवाब देने की नीति पर काम करता है। उसका दूसरा पक्ष यह कहता है कि वह युद्ध में नहीं बल्कि बुद्ध में विश्वास करता है।

उरी और पहलगाम के बाद भारत ने जिस तरह से पाकिस्तान में घुस कर उसे मुंह तोड़ जवाब दिया, उससे भारत का यह पक्ष उभरकर सामने आया कि हम घर में घुस कर मारते हैं। सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक और आपरेशन सिंदूर भारत की इसी नीति को आगे बढ़ाते हैं। हम गौर करें तो गत दिनों न केवल भारत सरकार की नीति बदली, बल्कि फिल्मकारों की सोच भी उसी के अनुरूप बदली है। यदि भारत सरकार की घर में घुसकर मारने की नीति चरम पर है, तो फिल्मों में भी आदित्य धर जैसे निर्माता निर्देशक भी उभरकर सामने आए, जो घर में घुसने की इस नीति को मजबूती के साथ सिनेमा के पर्दे पर पेश करने में कामयाब हुए हैं। उनकी फिल्म 'धुरंधर' की सफलता यही कहानी है। एक दूसरी फिल्म की कहानी यह कह रही है, कि सरकार और सिनेमा ही नहीं, समाज का दृष्टिकोण भी बदला है। उसे अब भारत माता की जय या 'गदर' के डायलॉग हिंदुस्तान कल भी जिंदाबाद था और हिंदुस्तान कल भी जिंदाबाद रहेगा जैसे डायलॉग संतुष्ट नहीं करते। उसे धुरंधर के नायक की तरह दुश्मन देश में घुसकर उसकी व्यवस्था पर हमला कर उसे मुंहतोड़ जवाब देने वाली अदा ज्यादा लुभाने लगी है।

'धुरंधर' के बाद 'धुरंधर-दो' या रिवेंज के प्रदर्शन से पहले यह अनुमान लगाया जा रहा था कि यह भी पहले भाग की तरह ही आतंकवाद की घटनाओं के बदले पर आधारित फिल्म होगी। लेकिन, जब यह पर्दे पर आई, तो उसके सीन टू सीन ट्विस्ट और टर्न देखकर यह अहसास हो गया कि निर्माता ने केवल आतंकवाद से ही नाता नहीं जोड़ा, बल्कि भारत में सोए स्लिपर सेल और भारत को आर्थिक रूप से तोडने वाली नापाक घटनाओं और षडयंत्रों पर भी उसकी पैनी नजर रही है। भारत सरकार की नोट की चारों ओर आलोचना हो रही थी। उसके बारे में भी 'धुरंधर-दो' देखने के बाद दर्शकों की प्रतिक्रिया और सोच बदलती सी नजर

आने लगी है। समझ आने लगा कि कालेधन को समाप्त करने की बात कहकर सरकार ने जिस उद्देश्य से नोट बंदी की थी, उसका मुख्य कारण पाकिस्तान में छप रही भारतीय करेंसी को ठप करना था। कुल मिलाकर 'धुरंधर' के दोनों भाग भारत सरकार की सक्रियता और आक्रामकता को प्रतिबिंबित करते है।

भारत सरकार की नीतियों के सिक्के का दूसरा पहलू यह भी है कि वह युद्ध में नहीं, बल्कि बातचीत और शांति में विश्व शांति में यकीन करता है। प्रधानमंत्री भी मौके-बेमौके पर सार्वजनिक और वैश्विक मंच पर यह कह चुके हैं कि हम युद्ध में नहीं बल्कि बुद्ध में विश्वास करते हैं। भारत सरकार की इस दूसरी नीति को प्रतिबिंबित करने वाली दूसरी फिल्म जो प्रदर्शन के मुहाने पर आ खड़ी हो रही है वह है सलमान खान की आगामी फिल्म 'मातृभूमि : आरआईपी वार!'

जिस समय सलमान ने अपनी इस फिल्म

बनाने का विचार उद्घाटित किया था, तब इसका शीर्षक 'बेटल आफ गलवान' रखा था। माना जाता था कि यह फिल्म भारत और चीन के बीच चले गलवान संघर्ष पर आधारित है। यह भी प्रचारित किया जा रहा था कि इसमें भारत के वीर जवान संतोष बाबू के पराक्रम कर चीनी सिपाहियों को नेस्तनाबूद करने के शौर्य को सलमान खान पर्दे पर उतारने जा रहे है। लेकिन, हाल ही में सलमान खान ने न केवल इसका शीर्षक बदला, बल्कि इसकी थीम को भी बदलने का प्रयास किया। अब यह फिल्म वार अर्थात युद्ध की नहीं, बल्कि आरआईपी अर्थात युद्ध को शांति में परिवर्तित करने का संदेश देने वाली फिल्म होगी।

सिनेमा और सरकार के इस बदले रुख का एक कारण यह भी बताया जा रहा है कि जिस तरह सरकार चतुराई से अपनी विदेश नीति को सिक्के के दो पहलू की तरह इस्तेमाल कर रही है, फिल्मों में

भी सिक्कें के इन दोनों पहलुओं को दो अलग-अलग तरीकों से प्रस्तुत कर भारत सरकार की ड्युअल पॉलिसी को पेश करने का प्रयास किया जा रहा है।

देश के दर्शकों की नहीं, बल्कि देश के नागरिकों के दृष्टिकोण में भी यही ड्यूल पॉलिसी दिखाई दे रही है। पाकिस्तान और चीन इन दो पड़ोसी देशों के बारे में भी उनके विचार अलग-अलग है। उनकी इस दोहरी विचारधारा का कारण भी स्पष्ट है। यह है दोनों देशों का भारत के प्रति व्यवहार जहां पाकिस्तान भारत में खून की धारा बहाने का घृणित कृत्य करता है। चीन भारत की भूमि हड़पने जैसी क्रियाओं को अंजाम देने में विश्वास करता है। लेकिन, हाल के दिनों में इसमें भी बदलाव देखने को मिला। ट्रंप के टैरिफ वार के बाद भारत और चीन के संबंधों में सुधार दिखाई देने लगा है। यही कारण है कि सलमान खान ने अब अपनी फिल्म की थीम को परस्पर टकराव से हटाकर शांति के स्वर अलापने का निर्णय लिया, जो समयानुकूल ही नहीं फिल्म की सफलता के लिए भी श्रेष्ठ है। क्योंकि, यदि गलवान नाम से यह फिल्म बनाई जाती और इसमें टकराव की थीम परोसी जाती तो निश्चित ही इसकी तुलना 'धुरंधर' से की जाती और इस मुकाबले में गलवान हल्की साबित हो सकती थी।

गलवान के नाम पर फिल्म का नाम 'मातृभूमि और आरआईपी वार' रखा गया है वह भी समझदारी का परिचायक है। गलवान का नाम सुनते ही भारत और चीन के टकराव का अहसास होने लगता है। जबकि, 'मातृभूमि' टाइटल वंदेमातरम जैसा अहसास कराती है। साथ ही यह भी ध्यान दिलाती है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी समारोह में शामिल होने के बाद सलमान का नजरिया बदला है जिसे उन्होंने अपनी फिल्म के टाइटल में बदलाव कर प्रदर्शित किया है। 'धुरंधर' ने तो घुसकर मारने वाली नीति का सफलता से साबित कर दिया। अब देखना है कि सलमान की 'मातृभूमि' देश की युद्ध के बदले बुद्ध की नीति को किस मोड़ तक ले जाती है।

गड्ढे... अच्छे लगते हैं!

अधिकार

प्रकाश पुरोहित

सुसरकार को कोसने के लिए सड़क के गड्ढे हर समय विपक्ष के लिए हाजिर रहते हैं। ये गड्ढे ऐसे दीर्घजीवी होते हैं कि कितनी ही बार भर दिए जाएं, तय समयसीमा में खाली हो ही जाते हैं, यानी फिर से गड्ढे बन जाते हैं। कई बार तो समझ नहीं आता है कि इंजीनियरिंग में सड़क बनाना पढ़ा रहे हैं कि सड़क के गड्ढे कायम रखने के बारे में।

शहर की सड़कों से आंख पर पट्टी बांध कर गुजरने वाला आम नागरिक सिर्फ गड्ढों के आधार पर बता सकता है कि इस समय किस सड़क से ले जाया जा रहा है। आरोप लगता है कि ठेकेदार, अधिकारी और इंजीनियर के कमीशन से यह तय होता है कि गड्ढे की उम्र कितनी रहेगी। सड़क पर चलने वाले रात और दिन का फर्क नहीं करते... कि उन्हें पता होता है कि कितने समय के बाद सड़क के किस हिस्से में डेढ़ फुट वाला गड्ढा आने वाला है। यदि गलती से कभी उस गड्ढे को ठीक भी कर दिया जाए यानी बूर दें तो भी चलने वाले तो उससे बच के ही निकलते हैं। जानते हैं 'चार दिन की सड़क, फिर वही गड्ढा।'

जिस तरह मंत्री कहते हैं ना कि बलात्कार तो होते रहते हैं, वैसे ही अधिकारी भी यह कहने में अब शर्म महसूस नहीं करते कि 'ना होगा बांस तो ना बनेगा डंडा' की तर्ज पर 'ना होगी सड़क तो गड्ढे भी नहीं होंगे' या इसे उलट लें, 'सड़क है तो गड्ढा होगा ही।'

ये गड्ढे ही हैं, जो भ्रष्ट के पेट का गड्ढा भरते हैं, वरना सूखी तनख्वाह से तो बच्चों की फीस भी नहीं निकलती। अच्छी सड़क तो कोई भी बना सकता है, लेकिन तय सड़क का तय गड्ढा बचाते हुए सड़क पुनर्निर्माण हर एक के बस की बात नहीं है। इसीलिए सरकारी अधिकारी हर बार उसी ठेकेदार को यह जिम्मेदारी सौंपते हैं, जो गड्ढा बरकरार रखने में सिद्धहस्त होते हैं।

सोचिए, यदि सड़क है और उसमें तयशुदा गड्ढे नहीं हैं तो सरकारी अमला क्या माथे पर हाथ धरे बैठा नजर नहीं आएगा! फिर जनता की आदत नहीं बिगड़ जाएगी कि सड़क पर गड्ढा कैसे हो गया! आम यकीन है सड़क और गड्ढे का तो मोदी-शाह जैसा साथ है! एक है तो दूसरा होगा ही! बिलकुल ट्रंप और नासमझी की तरह!

जो काम महंगी दवा और विशेषज्ञ डॉक्टर नहीं कर सके, गड्ढे ने कर दिया। चार दिन पहले की ही खबर है कि कोमा में अंतिम सांस ले रही महिला को दिमागी-मुर्दा बताकर बरेली से पीलीभीत ले जाया जा रहा था... कि एंबुलेंस सड़क के गहरे गड्ढे से उचक गई... और महिला ने सांस ली, आंख खोल दी। चमत्कार हो गया। संभव है आने वाले दिनों में प्रायवेट-पार्टी भी इस फील्ड में उतर आए... और ऐसी-ऐसी गड्ढेदार सड़क बना दे कि मुर्दा ले जाया जाए तो 'आह', 'ऊह' करता उठ बैठे। पीडब्ल्यूडी के रिटायर अधिकारी भी काम से लग जाएंगे और रोजगार के नए अवसर खुल जाएंगे। तब विज्ञापन उसी तरह नजर आने लगेंगे, जैसे आजकल कोचिंग-क्लास के मेधावी छात्रों के सचित्र छपते हैं।

'किसी भी तरह का कोमा हो, बेहोशी हो, याददाश्त चली गई हो, आंख से दिखना कम हो गया हो, एक बार हमारी 'गड्ढा-सड़क' पर यात्रा कर तो देखें... शर्तिया फायदा मिलेगा, वरना पैसे वापिस!

यह गड्ढा-पुराण इसलिए कि गड्ढे में सिर्फ खराबी नहीं है, खूबी भी होती है। अब ऐसा तो नहीं होगा कि उस बरेली-पीलीभीत सड़क पर ही कोमा के मरीज को ले जाया जाए और उसी गड्ढे की वजह से वह होश में आ जाए! हर शहर में सरकार ने ऐसी सड़क मुहैया करवा रखी है। जरूरत है इनका फायदा लेने की।

इस बदलाव के बाद यदि गड्ढे को कोसने के बजाय सड़क पर जगह-जगह 'गड्ढेश्वर' नजर आने लगें क्या आश्चर्य! मेरा गड्ढा तेरे गड्ढे से बढ़कर! हर खराबी में अच्छाई होती है... जैसे सड़क पर गड्ढा। हो सकता है, आने वाले दिनों में सड़क पर गड्ढे की शिकायत करने वालों को मानवता का दुश्मन मना लिया जाए।

चलो आज कविता लिखें, जिंदगी को लय दें

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

बेहर साल 21 मार्च हो मनाया जाने वाला विश्व कविता दिवस मानवता की सांस्कृतिक और भाषाई अभिव्यक्ति और पहचान के सबसे अनमोल रुपों में से एक है। यूनेस्को ने 1999 में पेरिस में 80 वें महासभा सम्मेलन के दौरान पहली बार 21 मार्च को विश्व कविता दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी। इसका उद्देश्य कविता के पठन, लेखन, शिक्षण को बढ़ावा देना है। कविता रंगमंच, संगीत, नृत्य जैसी अन्य कलाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने का अवसर भी देती है। हमारे देश में हिंदी कविता के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र माने जाते हैं। उन्होंने पुरानी परंपराआं से मुक्त हो खड़ी बोली और नये विषयों जैसे राजनीति, समाज से कविता को जोड़ा। विश्व के महान कवियों की बात करें तो केवल व्यास और सोफोक्लीज ही आ सकते हैं। व्यास वाल्मीकि के साथ और सोफोक्लीज एशिलस के साथ स्थान पाने के हकदार हैं। वैसे, विलियम शेक्सपीयर को नंबर कवि माना जाता है। हमारे यहाँ कबीर, दिनकर, पंत, निराला, तुलसीदास, सूरदास, बच्चन, गुप्तजी, वाजपेई जी, अशोक वाजपेयी, कुंवर नारायण, भवानी प्रसाद मिश्र, विनाद शुक्ल सहित और भी तमाम नाम है। रवींद्रनाथ टैगोर हमारे प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता कवि अपनी कृति गीतांजलि के लिए माने जाते हैं। राहुल सांकृत्यायन ने सरहपा को हिंदी हा प्रथम कवि माना है। इनकी प्रथम रचना दोहा कोश मानी जाती है।

कहाँ नहीं हो तुम ?
तुम हर जगह हो कविता
मेरी सुबह ही उनींदी आंखों में
उगते सूरज में
दोपहर ऑफिस में
कचरा बीनते बच्चों में
दुनिया के हर मेले में
बच्चे की मानिंद होती हो तुम
जैसे बच्चे स्वतः पैदा होते हैं
वैसे ही तुम
हर माहौल में पैदा होती हो
आंसू में भी, मुसकान में भी
तो हँसो, रोओ, जन्मों कविता
हर बच्चा मुकम्मल नहीं होता
वैसे ही हर कविता भी
बहने दो जिस भाव में बहे
ज़रूरी नहीं शब्द-ब-शब्द मिले
कैसा भी बच्चा हो
माँ प्यार करती है उसे
वैसे ही अपनी कविता हो प्यार करो
वो तुम्हें पहचान देगी
तो उसे प्यार करो, श्रृंगार करो
उठाओ कागज कलम

शुरु करो कविता जन्मने का सिलसिला
लिख डालो 'वो' जो जीवन से मिला
बस बना डालो जीवन को कविता
बहने दो अक्षरों की कलकल सरिता।

भारत की प्रथम महिला कवि तोरुदत्त थी जो बंगाली होते हुए अंग्रेजी, फ्रेंच में लिखती थीं। वे रामायण, महाभारत को पश्चिम देशो में पहुँचाने में कामयाब रही। विश्व इतिहास में मेसोपोटामिया की राजकुमारी एनहेडुआना को प्रथम ज्ञात महिला कवि लेखक के रूप में जाना जाता है। सरोजिनी नायडू की प्रसिद्ध कविताएं 'इन द बाज़ार्स ऑफ हैदराबाद', 'द विलेज सांग' और 'द पर्दानशीन' है। सबसे उम उम्र की कवि अमांडा गौरमन ने 25 वर्ष डी आयु में कठिनाइयों से जूझकर यूएसए की पहली राष्ट्रीय युवा कवि बनी। भारत में मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्र कवि की उपाधि दी गई है। उन्हें महात्मा गांधी ने यह उपाधि दी थी। रामधारी सिंह दिनकर भी राष्ट्र कवि ही श्रेणी में आते हैं। कवि सम्राट अयोध्या सिंह 'हरिऔध' को माना जाता है। हिंदी की पहली कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान माना जाता है। माना जाता है विश्व शांति की स्थापना और बुराइयों के खिलाफ लड़ने का कविता बेहतरीन साधन है। तभी तो भवानी प्रसाद मिश्र कहते हैः

जिस तरह हम बोलते है
उस तरह तू लिख
और इसके बाद भी
हमसे बड़ा तू दिख

साहित्य को जीवन के निकट लाने का यह कितना अद्भुत दर्शन है।

चलो आज कविता लिखें...
रचते रहे द्वंद, षड्यंत्र सदा
कोई तो प्रेम कथा लिखें
मरुस्थल में इक तो सरिता लिखें।
चलो आज कविता लिखें...
बच बच के चलन क्या कांटो से
रेगिस्तान में एक बगिया लिखें
कभी तो समंदर का खारा पानी चखें
चलो आज कविता लिखें...
ये माना तोड़ देती दम मुहब्बत इक रोज
ज़रूरी है क्या उनको बेवफ़ा लिखें?
नए सिरे से इश्क का नया सफ़हा लिखें
चलो आज कविता लिखें...
गिले शिकवे तो रोज का रोना है
मेहरबानी से भरा इक शुकराना लिखे
उतार के नकाब, जैसे हैं आज वैसे दिखें
चलो आज कविता लिखें...।

यूँ हमने अपनी जिंदगी कवितामय कर ली। आप भी करके देखें जिंदगी को लयबद्ध, एक सुखद अनुभव होगा। जिंदगी खुद पूछेगी और क्या कह रही है जिंदगी?

देश में अमन-चैन और खुशहाली की दुआ मांगी

भोपाल के ईदगाह में सुबह 7.30 बजे पहली नमाज अदा हुई। ताज-उल-मसाजिद में मौलाना हस्सान साहब की सरपरस्ती में खास दुआ कराई गई। भोपाल के संवेदनशील इलाकों में सुबह से पुलिस बल तैनात थी। : फोटो प्रवीण वाजपेई

फिल्म की राह में अड़ंगा... राजनीति!

❒ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

भारत ने राजनीतिक वजह से ऑस्कर के लिए फीचर फिल्म को थिएटर में रिलीज नहीं होने दिया है। 'द वॉइस ऑफ हिंद रजब' कौथर बेन हानिया ने बनाई है और गजा में फिलिस्तीनी लड़की के आखिरी कॉल दिखाती है। असली हिंद रजब की मौत फिलिस्तीन रेड क्रिसेंट सोसाइटी के वॉलंटियर्स के साथ फोन पर बात करने के बाद हुई थी, जब इजराइली सेना ने कार पर तीन सौ से ज्यादा गोलियां चलाई थीं। भारतीय सेंसर बोर्ड के इस फैसले को 'शर्मनाक' ही कहा जा सकता है।

मैगजीन 'वैरायटी' के मुताबिक सेंसर बोर्ड ने राजनीतिक वजह से 'द वॉइस ऑफ हिंद रजब' को रोक दिया है। वितरक मनोज नंदवाना ने बताया कि इसलिए रोका है कि बहुत सेंसिटिव है। फिल्म रिलीज करने से इंडिया-इजराइल का रिश्ता टूट जाएगा। उन्होंने फिल्म को फरवरी में सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन को सौंप दिया था, ताकि एकेडमी अवॉर्ड्स से ठीक पहले रिलीज किया जा सके।

कौथर बेन हानिया की लिखी फिल्म जनवरी 2024 में रजब की मौत को दिखाती है, जब परिवार गजा में बमबारी से बचने की कोशिश में थे। फिल्म में रजब की इमरजेंसी ऑपरेटर्स के साथ घबराई फोन पर बातचीत का असली ऑडियो इस्तेमाल किया है, जब वह मदद का इंतजार कर रही थी। इसे बेस्ट इंटरनेशनल फीचर फिल्म ऑस्कर के लिए नॉमिनेट किया था।

सितंबर में 'द वॉइस ऑफ हिंद रजब' को वेनिस फिल्म फेस्टिवल में बीस मिनट से ज्यादा तालियां मिलीं और फिर इसने सिल्वर लायन जीता। पिछले साल संध्या सूरी की फिल्म 'संतोष' को भी रोका था, जबकि यह पुलिस कार्रवाई की फिल्म है, जो काल्पनिक उत्तरी भारतीय राज्य की है। इसमें भारतीय जाति और धर्म की राजनीति गहराई से शामिल है। फिल्म को पहले भारत में शूट करने की लिए मंजूरी मिली थी। इतना ही नहीं हनी त्रेहान की फिल्म

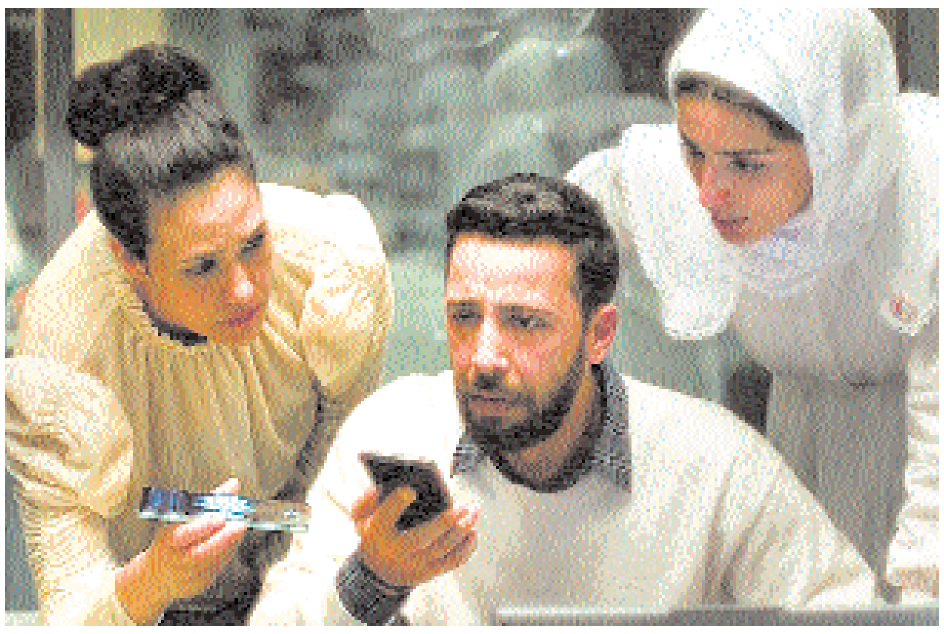

'पंजाब 95' को सेंसर बोर्ड की वजह से न सिर्फ टोरंटो फिल्म फेस्टिवल से हटना पड़ा, बल्कि यह फिल्म दो बरस से अटकी है। फिल्म में बोर्ड की तरफ से 127 कट बताए हैं, लेकिन डायरेक्टर का कहना है कि फिल्म में देखने लायक कुछ बचेगा ही नहीं।

फिलिस्तीनी-अमेरिकी फिल्म प्रोडक्शन कंपनी वाटरमेलन पिक्चर्स के को-फाउंडर बदी अली ने कहा पांच साल की बच्ची की मदद के लिए पुकार कब से 'डिप्लोमैटिक खतरा' बन गई? सच्ची कहानी से बचाने की जरूरत नहीं है। इससे दुनिया को सिर्फ यह पता चलता है कि हिंद की कहानी अभी भी पावर में बैठे लोगों को डराती है।

फिल्म की डायरेक्टर बेन हानिया ने इंस्टाग्राम पर इंडियन सेंसर बोर्ड के फैसले पर लिखा- क्या 'दुनिया की सबसे बड़ी डेमोक्रेसी' और 'मिडिल इस्ट की इकलौती डेमोक्रेसी' के बीच का हनीमून इतना नाजुक है कि फिल्म उसे तोड़ सकती है?